समाप्ति

कदाचित् यह पुस्तक किसी ऐसे मनुष्य के पढ़ने में आवे जिस ने अब तक अपने को स्त्रीष्ट के हाथ में नहीं सौंपा है। उसे स्मरण रखना चाहिये कि जब तक वह खुद पापमोचन प्राप्त न कर ले तब तक वह औरों को प्रभु के पास नहीं ला सकता है। ईश्वर का पुत्र खोये हुओं को ढूंढ़ने और बचाने आया, और यदि तुम खोये हुए हो तो प्रभु तुम्हें बचाने को तैय्यार है और तुम उससे उद्धार का आनन्द प्राप्त कर सकते हो। लिखा है "जितनों ने उसे ग्रहण किया उन्हों को अर्थात उस के नाम पर विश्वास करनेहारों को उस ने ईश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया।" क्या तुम उसे ग्रहण करते अथवा त्यागते हो? इस गम्भीर प्रश्न का शीघ्र निर्णय कर लो।

एक और बात विचार योग्य है अर्थात यह जिसने स्वयं उद्धार नहीं पाया वह औरों को स्त्रीष्ट के निकट कदापि नहीं ला सकता। यीशु स्त्रीष्ट संसार में इस लिये आया कि वह लोगों को जीवन देवे और अधिकाई से देवे। उस ने अपना सब कुछ दे दिया कि लोग पूर्णतः उस से जीवन प्राप्त करें। इस बात को भूल जाना अथवा उसे त्याग देना निपट ही बुरा काम है।

इससे न केवल ईश्वर की निन्दा होती वरन आत्मा को अनन्त हानि पहुंचती है। प्रभु तुम्हें और आत्माओं को उस के निकट लाने के लिये शक्ति और अनुग्रह देने को तैयार है। क्या हट-पूर्वक तुम इस का तिरस्कार करोगे ?

सूचीपत्र

आत्माओं को अपनी ओर फिराने का ईश्वरीय उपाय।

अध्याय १

संसार की आवश्यकता

सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। १ ला० योहन ५: १९ कटनी बहुत है पर बनिहार थोड़े हैं। तुम प्रार्थना करो। लूका १०: २ देखो समय बीता जाता है खेत कटनी के लिये पके जाते हैं। देखो त्यागा हुआ बीज गिर रहा और मार्ग में रौंदा जा रहा है। बनिहार न मिलने के कारण धन तरंगरूपी समुद्र में दूर तक फैला हुआ नष्ट हो रहा है। और उस से यह शब्द निकल रहा है कि क्या हमारा इस तरह बिखरे हुए पड़े रहना और नाश होना अवश्य है? संसार में ऐसे मनुष्यों की जो इस पृथ्वी को स्वर्ग से मिला दें अति आवश्यकता है। हम किस प्रकार से स्वर्गीय हथियार लेकर दुष्टात्मा से युद्ध करें और किस प्रकार मनुष्यों को ईश्वर के निकट ले आवें। यदि ऐसे मनुष्य मिल जावें तो प्रायः संसार के लोगों की भीड़ की भीड़ उनका पीछा करे। और यदि उनकी रीति और व्यवहार उन्हें

अच्छे न लगें तौभी वे उनकी बातों पर निश्चयपूर्वक विश्वास करते हैं। ये वे मनुष्य हैं जो ईश्वर को अच्छी रीति से जानते और बे रोक टोक ईश्वर के संग बात चीत कर सकते हैं। उनकी पहुंच सदा ईश्वर के सिंहासन तक है और किसी भी विशेष अवसर पर विश्वास के कार्य में उन्हें कठिनाई नहीं होती कारण यह कि प्रत्येक घड़ी ईश्वर की संगति में बने रहने के कारण उनका विश्वास ईश्वर के अनुग्रह और शक्ति से दृढ़ रहता है और वही हर समय उनकी आवश्यकता पूरी किया करता है। इस अनुभव को प्राप्त करने के लिये हमारा प्रभु यीशु ईश्वर पिता के हर एक सन्तान को बुलाता है पर मंडली के लाखों संभागियों में से बहुत ही थोड़े हैं जो इस प्रकार का जीवन बिताते हैं इसी कारण बहुत से ईसाइयों की ईश्वर से संगति घट जाती विश्वास डमाडोल हो जाता और प्रार्थनाओं के उत्तर बहुत ही कम हो जाने से यह उन्हें एक आश्चर्यजनक बात जान पड़ती है। बहुत ऐसे हैं जिनके विषय में कहा जा सकता है कि वे प्रार्थना रहित मसीही हैं। बहुत हैं जो व्यर्थ प्रार्थना करते हैं पर थोड़े हैं जो मन से प्रार्थना करते और उनकी प्रार्थना सफल होती है।

कदाचित आप जानते होंगे कि ईश्वर के वचन में "प्रार्थना" शब्द का कितना अधिक उपयोग किया गया है केवल पुराने नियम में ६०० से अधिक वार इसका उपयोग पाया जाता है जब कि सच्ची प्रार्थना की गई और ४५०

से अधिक साफ़ साफ़ उत्तर मिले। ईश्वर की यह मनसा है कि मनुष्य प्रार्थना करें और कि उनकी प्रार्थना सच्ची प्रार्थना होवे। परस्वार्थ के लिये विशेष करके अधिक प्रार्थना की जावे।

और यों प्रार्थना करते हुए वे अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। इस से अधिक और कोई दृढ़ प्रमाण नहीं कि ईश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

इतिहास इस के साक्षी हैं और व्यवहार इसे सिद्ध करता है। डाक्टर काइलर कहते हैं कि प्रार्थनाएं जिनका उत्तर मिल चुका वे ईश्वर विधि ऐतिहासिक खेत को ऐसा ढांप लेती हैं जैसे पर्वत को फूल ढांप लेते हैं। उत्तर प्राप्त प्रार्थनाएं हमारी सहभागिता के मंच के आस पास नये जन्म के समय ऐसी फिरती रहती हैं जैसे पक्षियों के झुन्ड के झुन्ड दल बांध कर उतर रहे हों। वे प्रार्थनायें जिनका उत्तर मिल चुका रोगियों के घर में दूतों के समान जीवन देने के लिये जाती हैं और यदि ईश्वर की इच्छा से रोगी मर भी जावे तो मृत्यु का डंक मानो जय का आनन्दमय गीत हो जाता है।

मंडली के लोगों को उपदेशों से लाभ तब ही होता है जब उस कार्य के लिये लोग प्रार्थना में लगे रहते हैं। बहुत वर्ष व्यतीत हुए मैं ने एक स्थान में एक सभा खोली। मण्डली तो इस कार्य के लिये तैयार न थी और बहुत लोग इसे चाहते भी न थे पर ईश्वर की आत्मा ने बड़ी शक्ति से काम किया। ऐसा

कि मण्डली के अधिक लोगों ने नया जन्म पाया इस का कारण मण्डली की आत्मिक दशा या मेरा प्रचार करना न था। सुनिये एक पर्वत के किनारे एक बूढ़ा मज़दूर किसान रहता था और वह गठिया के रोग से पीड़ित था। वह अकेला ईश्वर से बिन्ती किया करता था और पूरे विश्वास से प्रार्थना करता था और अन्त में उस की प्रार्थना सफल भई और इस का फल औरों के हेतु भलाई का कारण ठहरा। सचमुच एक संत मनुष्य की प्रार्थना में बहुत बल पाया जाता है। प्रभु के एक सेवक ने एक समय स्वप्न में सुन्दर मुकुटों की दो क़तारें देखीं जिनमें बहुमूल्य पत्थर जड़े थे और उसने पूछा कि क्या यह बड़ा मुकुट मेरे लिये है। पर एक दूत ने उत्तर दिया कि नहीं तेरे लिये नहीं है पर उस बेचारे बहिरे मनुष्य के लिये है जो उपदेश के समय पुलपिट की सीढ़ी पर बैठ कर मण्डली के लोगों के लिये प्रार्थना किया करता है।

कुछ समय हुआ कि एक सच्चे मनुष्य ने प्रार्थना के लिये कुछ जन इकट्ठे किये और उनसे कहा कि आज सांझ को जब तुम घर पहुंचो तब अपने गांव के सब मनुष्यों को जिन्हें तुम बचाना चाहते हो लिख डालना और तब उनके नाम ले लेके दिन में तीन बार प्रार्थना करना कि वे प्रभु की ओर फिरें और मुक्ति पावें। उस समय उस गांव में एक रोगी स्त्री भी थी जो अपने शरीर से बिलकुल निराश थी। वह १७ बरस से अपने बिछौने पर पड़ी थी और साधारण रीति से ईश्वर से

प्रार्थना किया करती थी कि बहुत लोग मुक्ति पावें । पर जब उस के कुटुम्बियों ने इन प्रार्थना करनेहारे लोगों का वर्णन किया तब उसने कहा "मैं भी कुछ कर सकती हूं" वह अपना दहिना हाथ काम में ला सकती थी। उसके पलंग के पास एक छोटी मेज़ लगी थी उसने कलम स्याही मांगी और अपने ५७ मित्रों के नाम लिख डाले और इनमें प्रत्येक के लिये तीन बार प्रतिदिन प्रार्थना करना आरम्भ किया और उनसे चिट्ठी पत्री का व्यवहार भी रखने लगी। फिर उसने अपने मसीही मित्रों को भी लिखा कि वे भी इन लोगों को अपनी अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करें और कि वे उनको उभारें कि वे पछताके विश्वास करें। उस रोगी स्त्री का पूर्ण विश्वास प्रभु पर था और वह दीनता और सचाई से प्रभु पर भरोसा करके उन आत्माओं के बचाने के लिये ईश्वर से बिन्ती करती थी और इसका यह फल हुआ कि उन ५७ मनुष्यों में से प्रत्येक ने प्रभु मसीह पर विश्वास लाके उसको अपना मुक्तिदाता मान लिया। यथार्थ में यदि मंडली का प्रत्येक जन प्रार्थना का जन बन जाय तो संसार में एक विचित्र परिवर्तन हो जाय। और अंधकार में बैठनेवाले लोगों के लिये प्रकाश प्राप्त करने का द्वार खुल जावे और इस प्रार्थना द्वारा प्राप्त किये हुए आनन्द को देख कर संदेही मनुष्यों के नेत्र भी खुल जावें। और वे इस रहस्य को जान लें कि मुक्ति के द्वार को खोलनेहारी चाबी प्रार्थना ही है। प्रार्थना के लिये किसी विशेष स्थान की आवश्यकता नहीं

है। एक रोगी मनुष्य जो निःसहाय अपने बिछौने पर इंग्लिस्तान में पड़ा हो, यदि वह चाहे तो प्रार्थना द्वारा चीन या जापान या और और दूर के देशों के रहनेहारे लोगों के लिये घंटों प्रार्थना कर सकता है। ऐसी ऐसी प्रार्थनाओं से जो लाभ और फल होते हैं, उस के सैकड़ों उदाहरण प्रत्यच्च हैं। बहुतेरे मिशनरियों को इन प्रार्थनाओं द्वारा ऐसे ऐसे अवसरों पर जब वे अति जोखिम और कष्ट में पड़े थे ढाढ़स और सहायता मिली है। इन प्रार्थनाओं से वे लोग जो अविश्वासी हैं बेचैनी और घबराहट में पड़ जाते हैं। और जब इन्हीं प्रार्थनाओं से वे शान्ति पाते तब वे ईश्वर के लिये जीवन बिताते हैं। बहुतेरी मण्डलियों में इन प्रार्थनाओं से मानों पवित्रात्मा की अग्नि लग जाती है और बहुत से समाजों में यह देखकर लोग चकित हो जाते और अनादि वस्तु खोजने लगते हैं। सब और वस्तुओं से अधिक इस मिशन के कार्य के लिये अवश्य है कि ईश्वर के बिचवई लोग और घर के लोगों में प्रार्थना की कड़ी बंधी रहे। प्रत्येक मण्डली क्यों नहीं अपने अपने उपदेशक और पादरी रखते मण्डली को ऐसे ऐसे लोगों के बारे में बतावें, जिन के लिये प्रार्थना की अति ही आवश्यकता है? विलायत में क्यों नहीं प्रत्येक ख्रीष्टियान उन उपदेशकों से जो विदेश में प्रभु की सेवा करते हैं मिले रह कर चिट्ठी पत्री करते जिससे इन दोनों की प्रति दिन की मिलनसारी से यह बात पूरी होवे। जो कि मत्ती के १८ पर्व्व १९ पद में लिखा है अर्थात् फिर मैं तुमसे कहता

यदि पृथ्वी पर तुम में से दो मनुष्य कुछ मांगे और उस बात के विषय में एक मन होवें तो वह उनके लिये "मेरे स्वर्ग-वासी पिता की ओर से हो जावेगी"

अध्याय २

संसार की पुकार

क्योंकि यह हमारे त्राण-कर्त्ता ईश्वर को अच्छा लगता और भावता है। जिसकी इच्छा यह है कि सब मनुष्य त्राण पावें और सत्य के ज्ञान लों पहुंचें। १ तिमोथी २: ३४॥ क्या आप इस बात से सन्तुष्ट रहते कि ख्रीष्ट को जाने बिना आप जीते और मर जाते। यदि ऐसा होता तो आप की बड़ी भारी हानि होती। और अन्य धर्मियों को सुसमाचार पहुंचाने में देरी करने से आप उनकी भी हानि कर रहे हैं।

"रात को एक दर्शन पावल को दिखाई दिया कि कोई मकिदोनी पुरुष उससे विनती करके कहता था कि उस पार मकिदोनिया देश जाके हमारा उपकार कीजिये"।

यह पुकार सैकड़ों वर्षों से चली आती है और उसकी तेज़ी और जोश दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाता है। पृथ्वी की सारी जातियों से यह पुकार आ रही है। संसार में जितना जोश आज कल है उतना कदाचित कभी नहीं हुआ परंतु इतनी अशान्ति और असन्तोष होने पर भी यह पुकार स्पष्ट सुनाई पड़ती है कि "आकर हमारा उपकार कीजिये।"

१८०० वर्ष से अधिक बीत गये जब कि हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने यह आज्ञा दी कि "इस लिये तुम जाके सब देशों के लोगों को शिष्य करो" तौ भी जिस समय यह आज्ञा दी गई थी उसकी अपेक्षा आज कल अधिक लोग हैं जिन्होंने त्राण का सुसमाचार कभी नहीं सुना। एक अरब से अधिक मुसलमान और अन्य धर्मी लोग हैं और इनमें से औसतन एक मिनट में ८३ लोग ख्रीष्ट को जाने बिना मर जाते हैं।

जब हमारे प्रभु ने नगर को देखा तो उस पर रोया। क्या हम इस बात में उससे मेल रखते हैं कि खोए हुए को ढूंढ़ें, उनके लिये जीवें, रोवें और प्रार्थना करें? क्या बहुत से ख्रीष्टयान लोग उनकी पुकार पर बहिरे, उनकी दशा पर अन्धे और उनके शोक पर मृतक नहीं हैं। आत्माओं को अपनी ओर फिराने का जो ईश्वरीय उपाय है क्या उस से वे अज्ञात नहीं हैं।

"ऊजड़ ठंडे पर्वत ऊपर, सुन्दर स्वर्ग नगर से दूर
खोए हुये भटक रहे हैं, तुमने हमने किया कुसूर
मुक्ति दाता निकट खड़ा है, देना था संदेस ज़रूर।"

निरास संसार को देखो। असंख्य आत्माएं समय रूपी जल की बाढ़ में बहती जाती हैं जिसका वेग सदा अधिक अधिक बढ़ता जाता है। वे अपनी सहायता करने में असमर्थ हैं। वे न तो ईश्वर ख्रीष्ट को जानती हैं न उनको कुछ आशा है। इस भयानक दशा को देखो और उस पुकार को सुनो जो सदा

अधिक बढ़ती जाती है कई एक खीष्टयान और और विषयों को देखने और सुनने में ऐसे लिप्त हो रहे हैं कि उनकी आंखें अंधी और कान बहिरे हो गये हैं जिससे वे इस भयानक दृश्य को नहीं देख सकते न इस करुनाजनक पुकार को सुन सकते हैं। इस लिये वे असंख्य लोगों की आवश्यक और असाहाय्य दशा को मालूम नहीं करते हैं। कोई कोई ऐसे भी हैं जो इस बहाव के किनारे आके तकते पर शोक से यह कहते हुए लौट जाते हैं कि "यह दृश्य अत्यन्त ही भयानक है हम इस को देख नहीं सकते हैं" और तब लौट कर जीवन के सुख विलास में फंस जाते और डूबते हुओं को अपनी आंखों से देखने पर भी डूबने देते हैं।

कई एक ऐसे भी हैं जो उस बुलाहट वा पुकार को सुनकर अर्थात आकर हमारी सहायता कीजिये. उस ओर जाते और उस पुकार को सुन कर वहां थोड़ी देर ठहरते और डूबनेहारों को जो किनारे पर हैं झुक कर निकालते हैं।

इनके सिवाय और लोग भी आते हैं जो इनसे भी थोड़े हैं। पर उनकी संख्या सदा बढ़ती जाती है, परमेश्वर का हाथ उन पर रहता है और वह उनको अपने आत्मा से चलाता और नाशमान संसार के बीच में उनको स्थिर रखता है। वे मनुष्यों को वैसा ही देखते जैसे ईश्वर देखता है। वे उन की असली हालत जानते हैं। वे भली भांति जानते हैं कि ऐसे लोगों की सहायता करने की शक्ति हम में नहीं है इस लिये वे अपने प्रभु

की ओर ताकते जो उनको कलवरी के प्रेम और शक्ति का और ही दर्शन दिखाता और कहता है कि "स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार मुझे दिया गया है इस लिये तुम जाओ" वे तब अपने को उसके हाथ में सौंपते और वह उन्हें अपने आत्मा से भर देता है। अब इस बात को जान कर कि हमारा निज लाभ उस के हाथ में रक्षा से है, वे अपना सब कुछ उस की सेवा में अर्पण करते हैं अपना प्राण तक उस के हाथ में सौंप कर वे उसी के नाम से नदी के बहाव में उतरते और एक एक करके खोये हुओं को दलदल से निकाल कर चटान पर पहुँचाते जो आनन्द से यह गीत गाते हैं "कि मेम्ने के लहू से जय है।"

जहां जहां ईश्वर के लोग जाते वहां वहां ईश्वर पहिले ही से प्रबन्ध करता और उनके लिये द्वार खोले जाते हैं। वे लाखों करोड़ों नाश होनेहारे लोगों के पास जा सकते और उन्हें बचा सकते हैं। परन्तु आत्माओं को प्रभु के पास लानेवाले कितने थोड़े हैं। भिन्न भिन्न देशों का हाल देखने से इस बात में सहायता मिल सकती है।

हिन्दुस्तान

बिशप वेस्काट ने कहा है कि "सबसे बड़ी धरोहर जो खीष्टयान जाति को सौंपी गई है सो हिन्दुस्तान है उसमें लगभग ३२ करोड़ लोग अर्थात संसार भर की मनुष्य संख्या का पांचवां भाग रहता है अथवा यों कहिये कि अंग्रेज़ी राज्य

भर की ⅛ प्रजा हिन्दुस्तान में है। ये हमारे संगी प्रजा हैं परंतु इनमें १०० में से केवल एक ख्रीष्टयान है, और शेष ९९ में से केवल थोड़े लोगों के मध्य मिशनरियों को उचित रीति से कार्य करने का अवसर हाथ लगता है।

इस देश में हिन्दुओं की संख्या अधिक है और इस कारण जाति बंधन के बल का परिणाम पुरुष, स्त्री और बालकों के जीवन को अनेक प्रकार से हानि पहुँचाता है।

बहुधा बचपन ही में लड़कियों की मंगनी हो जाती और वे विवाहित समझी जाती हैं। ८ और १२ वर्ष का उमर में ही वे पत्नियां हो जातीं और यदि विवाह से पहिले ही उनके होनहार पति मर जावें तो वे बेचारी जीवन भर क लिये विधवा हो जाती हैं।

"विधवा" शब्द का अर्थ ही कड़वाहट है और किसी स्त्री का विधवा होना उसके पहिले जन्म के पापों का फल समझा जाता है इस लिये विधवा का भाग्य घृणित और श्रापित है।

आजकल २६०००००० विधवाएं हिन्दुस्तान में हैं, इनमें से ७५००० तो वीस वर्ष से कम उमर की हैं। ११५००० दस वर्ष से कम उमर की और २०००० पांच वर्ष से कम अवस्था की हैं।

विधवा को दिन में केवल एक वार भोजन मिलता है और महीने में बहुधा १० से २० दिन तक उपवास करना पड़ता है और धरती पर सोना पड़ता है।

हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग सहायता के लिये पुकार रहे हैं। इन खोये हुओं के लिये हमारे प्रभु ने कलवरी का दुःख सहा परंतु इनमें अधिक लोग ऐसे हैं जिनके पास प्रभु के इस कार्य की कथा सुनाने को कोई नहीं गया जो उसने उनके निमित्त किया।

जापान

जापान ऐसा देश है जिसने सारे संसार को अचंभित कर रक्खा है। डारविन कहते हैं कि "जापान देश की सभ्यता इतिहास में अति आश्चर्यजनक बात है।" जापान की जन-संख्या लगभग ५०००००००० है वहां बुद्धधर्म माना जाता है। कदाचित सैकड़ा पीछे ८० मनुष्य नास्तिक हैं। बुद्ध धर्म्म से स्त्रियों को केवल एक आशा मिलती है अर्थात यह कि अगले जन्म में वे मनुष्य बनेंगी।

जापान में रोमनकेथोलिक खीष्टयानों ने काम करने का यत्न किया परंतु उनके काम में घटी पाई गई।

जेसूइस्ट नामक खीष्टयान मत १६३७ ई० में पूरी रीति से बंद कर दिया गया। सन् १८५९ ई० में पहिला प्राटेसस्टेमिशनरी अमेरिका देश से आया। खीष्टयान धर्म्म के विरुद्ध जो सर्कारी आज्ञाएं थीं सो सन् १८७३ ई० में रद्द कर दी गई और खीष्टयान पंचाङ्ग चालू किया गया। सन् १८७६ ई० से इतवार हफ्ते में विश्राम का दिन माना गया। १८७७ ई०

में पहिली जापानी मण्डली स्थापित हुई। १८८६ ई० में जापानी भाषा में धर्म पुस्तक बन कर तैयार हुई। अब वहाँ ५०००० से अधिक देशी ख्रीष्टयान हैं। आज के दिन जापान देश खुला है। वह सत्य धर्म की खोज में है। क्या वे जो प्रभु यीशु ख्रीष्ट को जानते हैं उस के प्रेम की कथा सुनाने वहां जावेंगे ?

चीन

संसार भर की जनसंख्या का चौथा हिस्सा चीन देश में रहता है। इस देश में प्रति दिन औसतन ३० हज़ार लोग मरते हैं। हावर्ड टेकर साहिब की मेम साहिबा लिखती हैं कि "संसार भर की स्त्रियों का पांचवां भाग चीन देश में है और ये सब उस मुक्ति-दाता को जानने के लिये ठहरी हुई हैं जिसने उनके लिये अपना प्राण दे दिया।"

नेपोलियन ने एक बार कहा कि "जब चीन देश उठेगा तो सारे संसार की सूरत को बदल डालेगा" सुसमाचार के द्वारा ख्रीष्ट की मण्डली को शक्ति है कि चीन देश को जगा देवें। इस देश में १५०००० ख्रीष्टयान हो चुके हैं। और देशी मण्डली परमेश्वर के आत्मा की शक्ति सहित आने की बाट देख रही है और हम आनन्द से कहते हैं कि वह उन पर प्रगट हो चुका है "सहायता कीजिये" यह पुकार तुमने सुनी है तो क्या इन चीनी ख्रीष्टयानों के लिये तुम प्रार्थना करोगे कि वे पवित्रात्मा से भर-पूर हो जावें।

चीन देश के करोड़ों लोगों को इस से क्या लाभ होगा सो हम इस बात से जान सकते हैं अर्थात ऐसा समझते हैं कि जितने लोग ख्रीष्ट के पास लाये गये हैं उन में ८ में से ७ देशी ख्रीष्टयानों के द्वारा लाये गये।

हम चीन देश के विशेष रीति से ऋणी हैं सब से बड़ी बुराई जो अंग्रेज़ लोगों ने चीन देश में फैलाई, सो यह है कि उन्होंने बरिआई से अफीम का व्यापार उस देश में चालू किया। इस भयानक पाप के क्या क्या भयङ्कर परिणाम हुए हैं। सो तो न्याय के दिन ही प्रगट होंगे। आज कल चीन के लोग इस श्रापित वस्तु से छुटकारा पाने के लिये बड़ा युद्ध कर रहे हैं। परंतु यद्यपि ये लोग इस नेक काम में लगे हैं तौभी विदेशी लोग अपने लाभ के निमित्त उनका यत्न निष्फल करना चाहते हैं। शंघाई नामे नगर से मार्शल ब्रुमहाल साहिब ने थोड़े दिन हुए यह लिखा था कि "१९०६ ई० की चीनी सर्कार की आज्ञा की ४ थीं धारा के अनुसार चीन के अफ़सरों ने शंघाई नगर के देशी भाग में ७०० से अधिक अफीम की दूकानें बन्द करवा दिईं। एक मनुष्य ने इस आज्ञा के विरुद्ध काम किया उस को २०० बेंत हाथ पर लगाये गये और २४ घंटे तक वह अपनी दूकान के दरवाजे पर बांधा गया। जिन लोगों ने खुशी से अपनी दूकान बंद कर दी उनको चांदी का एक एक तग़मा दिया गया। और मज़दूर जो अपने अपने घरों से दूर नौकर थे सो बिना खर्च अपने घर भेजे गये। अथवा कोई कोई व्यापार सीखने के लिये स्कूल में भर्ती किये

गये ऐसे समय में इन लोगों को शान्त रखने के लिये दो मास तक सब कर माफ़ कर दिये गये।

यद्यपि नगर के देशी भाग में यह हाल हुआ तौभी उस भाग में जहां पांच लाख चीनी लोगों के सिवाय और और जाति के लोग भी रहते हैं १६०० अफीम की दूकानें खुली हैं।

सेन फ्रांसिस्को नामक शहर एक समय एक मिनट में बरबाद हो गया। क्योंकि भूगोलिक रीति से उस की बनावट में भूल हुई थी हम को सचेत रहना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि हमारा देश भी भूल के कारण अन्त में जोखिम सहे।

हे जीवते ईश्वर की मण्डली अपनी पाप युक्त नींद से जाग। क्या तुझ को वह भयानक पुकार नहीं सुन पड़ती जो समुद्र पार के देशों से आती है? क्या तुझ को इस बात की कुछ भी चिन्ता नहीं है कि संसार के लोगों का तीसरा भाग ईश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार सुने बिना चीन देश में मर रहा है? क्या तू अपने भाई के लहू की पुकार पर अपना कान बंद कर सकती है? चीन देश में प्रति मास १० लाख लोग ईश्वर को जाने बिना मर रहे हैं।

अध्याय २

खीष्टयान का कर्त्तव्यकर्म

"जब मैं दुष्ट से कहूं कि हे दुष्ट तू निश्चय मरेगा तब यदि दुष्ट को कुमार्ग छोड़ने के लिये न चितावे तो वह दुष्ट अपने

अधर्म में फंसा हुआ तो मरेगा पर उस के प्राण का लेखा मैं तुझ ही से लेऊंगा" हिजकियेल ३३: ८

"देखो मैं तुम्हें भेजता हूं"। लूक १०: ३

"इस लिये तुम जाओ"। मत्ती २८: १६

"हे ईश्वर कृपा करके मुझे अपने अत्यन्त बड़े फ़सल के खेत में जो चारों ओर बड़े सागर की नाईं फैला है काम में ला। हां बटोरनेहारे तो थोड़े हैं और डर है कि बहुमूल्य प्राणियों की हानि हो तिस पर भी दया करके हे ईश्वर मेरे लिये एक स्थान ठहरा कि जहां जाकर मैं प्रभु का वचन सुनाऊँ। चाहे वह कैसा ही कठिन स्थान, छोटा या बड़ा क्यों न हो और जहां जाने को और बनिहारों ने नाह किया हो पर मैं आनन्द से जाऊंगा और तेरे कार्य को पूर्ण करूंगा।"

आत्माओं को कमाना सबसे बड़ा कार्य है जो मनुष्य को सौंपा गया और इस कार्य के करने के लिये होशियारी और प्रार्थना की अति आवश्यकता है। प्रत्येक विद्या की मूल सत्यता होती है जिसके आस पास और और विशेष शक्तियां और सत्यतायें घिरी रहती हैं और जिससे मिलकर वे सम्पूर्ण सत्यता को प्रगट करती हैं। पर कोई विद्या ऐसी नहीं जिसकी मूल सत्यता प्रगट हुए ना पाये बिना ही वह कठिन कार्य समझ में आ जावे। यदि यह बात जीवन के छोटे छोटे विषयों में सत्य ठहर चुकी है तब कितना अधिक अवश्य है कि हम आत्मा ...ने के कार्य की मूल सत्यता को खोजें। क्योंकि इस काम

की सफलता केवल ईश्वर ही की आज्ञा जानने और मानने ही से प्राप्त हो सकती है इस मूल सत्यता को पाना और उस पर चलना ही सफलता का कारण है और इसके बिपरीत कदापि सफलता नहीं हो सकती।

मूसा जब पवित्र तंबू बनाने पर था तब ईश्वर ने उसे चिता कर कहा कि "देख तू सब वस्तुएं उसी नमूने के अनुसार बनाना जो तुझे पर्वत पर बताया गया" प्रभु यीशु ख्रीष्ट हमारा पूर्ण नमूना है और उस में पूरी शिक्षाएं भी हैं उस की प्रतिज्ञाओं की मानो पर्वत श्रेणी बंधी हुई है जिस की अलंग में ईश्वरीय आत्माओं की तराई निकलती हैं और यदि हम इन तराइयों में उचित रीति से चलते हैं तो इनके अनुग्रह और शक्ति का आनन्द हम बहुतायत से पाते हैं।

जीवन के भारी कार्य को सीखने के लिये हम धर्म पुस्तक को देखें जहां हमारे प्रभु ने एक एक जन सम्बंधी एक एक बात बताई। नया नियम एकता के मत की पुस्तक है प्रभु यीशु ख्रीष्ट का कार्य और जीवन पदार्थ विषय के मानो पाठ हैं जो इस सचाई को प्रगट करते हैं प्रभु के शिष्य लोग भी जहां तक हमें उनकी सत्यता ज्ञात है "एक एक कर के बुलाये गये।" उस के आश्चर्यकर्म और दृष्टान्त भी अलग अलग और एक एक मनुष्य के लिये थे।

क्या इन सब बातों से हम इस बड़ी सत्यता को नहीं देखते कि यद्यपि सुसमाचार ईश्वर की मुक्ति को सारे संसार के लिये

दे रहा है तौभी उस की इच्छा यह है कि यह समाचार हमारे द्वारा संसार में "एक एक को दिया जावे।" ईश्वर ने इसराएलियों से प्रतिज्ञा किई कि "तुम एक एक करके इकट्ठे किये जाओगे।" "मेरे पीछे हो लो कि मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा" यही आज्ञा और प्रतिज्ञा हम में से प्रत्येक के लिये है।

हरतन पेज साहिब का वर्णन है कि वह अपना जीवन हीनता से और कभी कभी तंगी से भी व्यतीत करते थे। ये व्यापार आदि से अपना निर्वाह करते थे इन को इस सत्यता का भेद मिला और इन्हों ने एक एक करके मनुष्यों को प्रभु के लिये कमाया और उनको यह जानकर बड़ा आनन्द हुआ कि एक सौ से अधिक मनुष्य ईश्वर के भय में जीवन बिताने लगे।

हर एक सच्चा ख्रीष्टयान इस कार्य के लिए अर्थात "शिष्य बनाने के लिये" बुलाया जाता है। दूतों को नहीं पर मनुष्यों को यह धन्य कार्य सौंपा गया है कि वे दुर्बल प्राणियों को बचावें और इस कार्य के लिये कोई चुने हुए लोग नहीं हैं पर हर एक मनुष्य जो ईश्वर का सन्तान है यह कार्य कर सकता है। बहुत से लोग हैं जो दो बातों की भूल करते हैं पहिले कोई समझते हैं कि यह सेवकाई केवल पादरियों वा केटीकिस्टों वा उपदेशकों का काम है और जो केवल मण्डली के मेम्बर हैं इन से इस का कुछ सम्बन्ध नहीं। दूसरे कोई कोई इस कार्य को अत्यन्त कठिन समझते हैं और कहते हैं कि केवल थोड़े लोग हैं जो इसे कर सकते हैं। आत्मा के बचाने की योग्यता आप से

बनी हुई नहीं है और न वह बड़े परिश्रम का फल है पर यह शक्ति तो प्रभु यीशु ख्रीष्ट अपने सब शिष्यों को जो उसे ग्रहण करते हैं देता है (प्रेरितों की क्रिया २:१७, १८ पढ़ो) "अर्थात कि वही जो बुद्धिमान है आत्माओं को बचाता है।"

डाक्टर मिलर साहिब अपनी "सुन्दर जीवन के भेद" नामक पुस्तक में लिखते हैं कि कदाचित हम औरों के लिये प्रार्थना करने का अभ्यास करना कर्तव्य कर्म नहीं समझते और इसके अभाव में हम ईश्वर के विरुद्ध पाप करते हैं हम उस को कुछ लाभ समझते तो हैं पर प्रेम का गंभीर कर्तव्य कर्म नहीं समझते। ऐसा समझने से मानो हम अपने ही लिये वा अपनी ही इच्छा पूर्ण करने के लिये प्रार्थना करते हैं हम केवल अपने ही दुःखों को अपने ही क्लेशों को अपने ही कार्यों को और अपनी ही आत्मिक वृत्ति को विचारते पर ज़रा बाहर दृष्टि कर अपने मित्रों की दशा नहीं सोचते। स्वार्थ के लिये प्रार्थना करना सबसे बुरे प्रकार का स्वार्थपन है। यदि कभी इस प्रेम की उत्तमत्ता और पवित्रता की आवश्यकता है तो उसी समय जब हम ईश्वर के सन्मुख उपस्थित हैं। हम नहीं जानते कि औरों की आशीष और त्राण कितना अधिक हमारे प्रार्थना करने पर निर्भर है। औरों के लिये प्रार्थना न करने से हम नहीं जान सकते कि कितने मनुष्य बहुधा अपनी दुर्बलताओं के कारण पाप में फंसते हैं। हम ईश्वर और मनुष्यों के बीच में खड़े हैं। हमें आज्ञा है कि हम अपने को तनिक भी

आराम न दें पर सदा लगातार उनके लिये जो हमारे आसपास हैं प्रार्थना करें। हमारी मध्यस्थता की प्रार्थना ही संसार के बचाने का उपाय है। मनुष्य अपने को ईश्वर से छिपाता है और प्राचीनकाल से वह ढूंढ़ा जा रहा है, प्रभु यीशु संसार में मनुष्य को ढूंढ़ने और बचाने आया और जब उसने एक को पाया तब उस ने इस एक बचे हुये को औरों के दिखाने के लिये वहीं रक्खा पर उसने उसे औरों के बचाने के लिये भेजा कि वह जाकर और आत्माओं को ढूंढ़ के और बचा के उसके पास लावे। संसार एकट्ठा एक बार ही प्रभु की ओर नहीं फिर सकता। मनुष्य एक एक करके दोषी ठहराये जाते और एक एक करके बदले जाते क्योंकि शिष्य लोग भी जब बदले गये तब उन्होंने पृथक पृथक यीशु से कहा कि हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूं।

अन्द्रिया ने उचित मार्ग धारण किया "शिमोन पितर के भाई अन्द्रिया ने पहले अपने भाई शिमोन को पाकर उस से कहा कि हमने खीष्ट को पाया है। और वह उसे यीशु के पास लाया।" फिर फिलिप भी नथनेएल को पाकर कहता है कि "हमने नासरत के यीशु को पाया है जिसके विषय में मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में लिखा है" फिलिप यह भी उस से कहता है कि "आ और देख।"

सचमुच में पहिले अपनों को खीष्ट के पास लाना चाहिये। अन्द्रिया अपने भाई को और फिलिप अपने मित्र को अपने

निज परिश्रम से पाते हैं। हमारी मुक्ति का पहिला फल वे ही हैं जिन्हें हम प्यार करते हैं या जिनके संग हम ने अधिक बुराई किई। क्योंकि इस काम के लिये एवज़ो की आवश्यकता नहीं। पवित्रात्मा की शक्ति में एक नया खीष्टयान खुद यह काम कर सकता है।

बहुत से लोग अपना ही अवसर खो बैठते हैं और अपना आत्मिक जीवन पवित्रात्मा की आज्ञा न मानने के कारण और अपना ही स्वार्थ ढूंढ़ने के कारण बिगाड़ देते हैं उनसे कभी यह न कहा गया कि जाओ यहूदिया या सामरिया में शिष्य बनाओ क्योंकि उन्होंने प्रभु की आज्ञा के अनुसार यरूशलेम ही में काम आरंभ किया।

तू और तेरा सारा घराना नौका में प्रवेश करना।

बहुत लोगों ने यीशु मसीह के समान और मनुष्यों को देखना नहीं सीखा क्योंकि जब यीशु ने भीड़ देखी तब उसे उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों के समान व्याकुल और तितर बितर थे। अनगिन्ती लोगों की दशा अब भी वैसी ही बुरी है जैसी पहिले थी। पर कितने थोड़े हैं जो प्रभु के से प्रेम की ज्वाला से उन पर दयामय होते हैं।

हां कोई कोई ऐसे भी हैं जो आत्मा के कमाने का भार बूझते और बरनार्ड साहिब के समान समझते हैं जिस ने कहा

कि मुझे चिन्ता नहीं कि मैं कहां और कैसे रहूं वा मुझे कितनी ही कठिनायां क्यों न पड़ें। पर चिन्ता मुझे यह है कि मैं आत्माओं को बचाऊं जब मैं सो रहा था मैं ने इन्हीं बातों का स्वप्न देखा और जब मैं जागा तब पहिले पहल मेरे मन में इसी बड़े काम का सोच आया । मेरी सारी इच्छा यह थी, अन्य आत्माओं को बचाऊं और मेरा सारा भरोसा ईश्वर पर था ।

यदि हम अपनी मुक्ति को केवल धरोहर समझें तब हम खीष्टयानों का यह कर्त्तव्यकर्म होगा कि हम अन्य धर्म्मियों को खीष्ट के पास लायें । पर कैसे ?—

विश्वास और प्रार्थना से—१ योहन ५: १६, मार्क २:३-१२

अपने चाल चलन से । मार्क ५: १--२०, प्रेरित ११: २४

चितावनी से—हिजकियेल २:१८

मनाने से—प्रेरित १४:१

इस में संदेह नहीं, यदि हम ज़रा सोचें कि प्रभु के राज्य में कितना अन्तर हो जाय, यदि प्रत्येक खीष्टयान केवल तीन प्राणियों को साल भर में प्रभु के लिये कमावें मान लीजिये कि संसार भर में ५००० खीष्टयान हैं और यदि एक एक खीष्टयान एक साल में तीन तीन प्राणी बचावें और वे जो बच गये इसी प्रकार लगातार तीन तीन प्राणी बचाते चले जावें तो दस बरस में सम्पूर्ण संसार के लोग प्रभु के राज्य में आ जावेंगे जैसे कि आगे के हिसाब में लिखा है

१ वर्ष में	५००० × ३ =	१५००० +	५००० =	२०,०००
२ ,,	२०००० × ३ =	६०००० +	२०००० =	८०,०००
३ ,,	८०००० × ३ =	२४०००० +	८०००० =	३२०,०००
४ ,,	३२०००० × ३ =	९६०००० +	३२०००० =	१२८००००
५ ,,	१२८०००० × ३ =	३८४०००० +	१२८०००० =	५१२००००
६ ,,	५,१२०,००० × ३ =	१५३६०,००० +	५१२०००० =	२०४८००००
७ ,,	२०४८०००० × ३ =	६१४४०००० +	२०४८०००० =	८१९२००००
८ ,,	८१९२०००० × ३ =	२४५७६०००० +	८१९२०००० =	३२७,६८०,०००,
९ ,,	३२७,६८०,००० × ३ =	९८३०४०००० +	३२७,६८०,००० =	१,३१०.७२०,०००

अब आप जान सकते हैं कि यह केवल एक अनुमान है पर यदि यह हिसाब सहीह माना जाय तो १० बरस से पहिले सम्पूर्ण संसार मसीह के झंडे तले आ जावे।

अब क्या यह हिसाब आप के मन में कोई विशेष चिन्ता उत्पन्न करता है? क्या आप का कर्त्तव्य कर्म नहीं कि प्राचीन आज्ञा को मानो जो लिखा है कि "जा आज मेरी बारी में काम कर।"

क्या आप चाहते हैं कि प्रभु यीशु के दूसरी बेर आने से पहिले यह संसार ख्रीष्टयान हो जाय? क्या आप का कर्त्तव्य कर्म नहीं है कि इस कार्य में शीघ्रता करें? डाक्टर गार्डन साहिब कहते हैं कि यद्यपि यह हमारा काम नहीं कि सम्पूर्ण संसार को मसीह के पास लावें पर यह हमारा कर्त्तव्य निःसन्देह है कि "मसीह को संसार के पास ले जावें" हमारे लिये स्पष्ट आज्ञा है कि "जाओ और शिष्य करो" और ऐसा करने की शक्ति घट नहीं गई। क्या वे जो इस आज्ञा का पालन नहीं करते प्रभु के आने पर लज्जित न होंगे?

अध्याय ४
अवसरों के विषय में

"उन में से जो अब छोटा है उस के वंश से भी हज़ारों उपजेंगे। और जो तुच्छ है उस के वंश से भी सामर्थी जाति उत्पन्न होगी" मैं, ईश्वर समय पर इस कार्य के लिये शीघ्रता करूंगा। यशैयाह ६०:२२

"अन्द्रिया ने पहिले अपने भाई को पाया। योहन १:४०

"फिलिप ने नथनेयेल को पाया" योहन १:४५

आत्मा कमाने के काम में सफलता प्राप्त करने के लिये दो बातों की आवश्यकता है—

(१) पापियों के लिये ईश्वर के पास जाना।

(२) ईश्वर के निमित्त पापियों के पास जाना।

केवल प्रार्थना करना ही बस नहीं। विश्वासमय प्रार्थना साथ खरापन और निष्कपटता और सेवकाई होनी चाहिए।

इस बात को स्मरण रखिये कि आत्माओं को बचाने के लिये जो कुछ हम ख्रीष्ट का काम करते हैं और जो कुछ ख्रीष्ट हमारे द्वारा करता है इन दो बातों में इतना अन्तर है कि जिस को हम किसी प्रकार हल्का नहीं समझ सकते। इस काम में सफलता तभी हो सकती है जब कि प्रभु यीशु ख्रीष्ट ही उपाय करनेहारा, रीति बतलानेवाला, और समय ठहरानेवाला हो। यदि हम पवित्रात्मा को अवसर देवें तो वह न केवल अगुवाई करेगा और शक्ति देगा वरन प्रत्येक को आत्माओं के कमाने में उद्योगी भी करेगा।

सब से अधिक आत्माओं को वही मनुष्य ख्रीष्ट के पास पहुँचा सकता है जो इस काम के लिये सदा चौकस और तैयार रहे जो बात हमारे मन में सर्वोपरि अथवा श्रेष्ठ होती है उस पर स्वभाव ही से हमारा ध्यान लगता है। जिसके मन में प्रेमी ख्रीष्ट वास करता है उस को सर्वत्र आत्मा कमाने के अवसर मिलते हैं।

एक समय एक जहाज़ी अफ़सर पोर्टस्मौथ नगर से लंदन शहर में प्रदर्शनी देखने के लिये गया। प्रदर्शनी बड़ी मनोहर थी। और वह चारों ओर की अद्भुत वस्तुओं पर ध्यान करने के लिये एक बैठक पर बैठ गया। एक कुलीन स्त्री भी आराम

करने को वहां आ बैठी, और बाजों की मधुर आवाज़ सुनने लगी। उसी समय एक मनुष्य के मन में यह बात उत्पन्न हुई "कि क्या जाने यह स्त्री मेरे मुक्तिदाता को जानती है या नहीं।" उसने अपने मन में कहा हे प्रभु मेरे द्वारा अपना काम कर कि मैं तुझे इस स्त्री पर प्रगट कर सकूं। बाजे के विषय में बातचीत करते करते द्वार खुल गया। उसने उस स्त्री से ख्रीष्ट के विषय में बातचीत किई। और उस का फल यह हुआ कि सारी भीड़ के सन्मुख वे दोनों प्रार्थना करने लगे और उसी समय उस स्त्री ने अपने तईं ईश्वर को सौंप दिया।

अब देखना चाहिए कि यदि उसे काम में इतना शौक़ न होता तो वह इस अवसर को खो देता। यही कारण है कि हम जो ख्रीष्टयान हैं बहुधा ऐसे अवसरों को खो देते हैं।

एक घड़ीसाज़ हर हफ़्ते एक कुलीन स्त्री के घर पर घड़ी सुधारने जाया करता था। उस स्त्री ने प्रभु से प्रार्थना किई कि "हे प्रभु मुझे इस मनुष्य की आत्मा सुधारने में सहायता दे" वह मनुष्य त्रय को नहीं मानता था। पर अपने बिश्वास में ऐसा स्थिर था कि अच्छे अच्छे बुद्धिमान भी उस से धर्म सम्बंधी बातचीत करने का साहस नहीं करते थे। पर स्त्री ने हफ़्ते भर इस मनुष्य के लिये प्रार्थना की। और जब वह फिर आया और घड़ी सुधारता था तब इस स्त्री ने उस से बातचीत किई। १५ महीने तक उस स्त्री ने उस के लिये प्रार्थना और काम किया और अन्त में उस ने उस की आत्मा को प्रभु यीशु ख्रीष्ट

के लिये जीत लिया । एक बिशप साहिब एक नगर के विषय में लिखते हैं कि जब वे उस नगर में आये तब उस नगर की एक गली में केवल एक ख्रीष्टयान घराना था जो ईश्वर की उपासना करता था । पर वे कहते हैं कि जब मैं जाने लगा तब कदाचित चन्द गलियां ऐसी हों जहां एकाद घराना ऐसा पाया जाता हो जो ईश्वर की उपासना न करता हो ऐसी सफलता जैसी उस नगर में प्राप्त हुई प्रत्येक आत्मा के कमानेवाले को प्राप्त हो सकती है, यदि वह पूर्ण विश्वास की प्रार्थना से पूर्ण उद्योग में लगा रहे ।

बहुत लोग हैं जो नहीं समझते कि ख्रीष्टयान का काम हर समय काम में लगा रहना है । वह कभी इस कार्य से अलग नहीं हो सकता न पेन्शन लेकर घर बैठ सकता है । पृथ्वी पर उस का एक काम यह है कि ईश्वर की महिमा प्रगट करे और स्वर्ग में लोगों को बसावे और इस कार्य के लिये अभी समय है हर स्थान में इस की आवश्यकता है क्योंकि लोग सदा मरते जाते हैं । छुट्टी के दिनों में किसी किसी को ईश्वर अद्भुत रीति से आशीष का द्वार बनाता है । एक समय दो मित्रों ने अपनी गर्मी की छुट्टी देहात में बिताई । ईश्वर ने दो गांव के लोगों को उनके मन में बसा दिया । और उन्हों ने अपना आराम छोड़ कर इन लोगों के लिये प्रार्थना करना आरंभ कर दिया । जब वे अपनी अपनी छुट्टी बिता के अपने काम पर वापिस गये तब उन्होंने फिर प्रार्थना आरंभ किई कि हे ईश्वर किसी को

भेज कि वह जा के उन लोगों में काम करे। पांच महीने की प्रार्थना करने के पीछे एक मिशन ने कुछ आदमी इन दोनों गांवों में भेज दिये। उन्होंने अपनी प्रार्थनाओं को और भी अधिक बढ़ा दिया। और विश्वास से सुसमाचार की आशा करते रहे जिसका परिणाम यह हुआ कि इन गांववालों में से १०० मनुष्यों ने प्रभु को अंगीकार किया।

एक पादरी साहिब लिखते हैं कि "आत्माओं को कमाये बिना मुझको मण्डली के काम में घटी जान पड़ती है" थोड़े दिन हुए कि एक एंजिन चलानेवाला मसीही हो गया। एक धर्म प्रचारक ने उस से कहा कि भाई तुम्हें "एक एक के लिये कार्य करनेवाली सभा" में सहभागी होना चाहिये और यही काम तुम्हारे लिये ठीक है। उस ने उत्तर दिया कि मैं ने यह कभी नहीं सुना, वे लोग क्या करते हैं? उस धर्म प्रचारक ने कहा "ईश्वर से उन मनुष्यों के नाम पूछो जिनके लिये वह चाहता है कि तुम प्रार्थना करो, प्रति दिन उन के लिये प्रार्थना करो और अपनी शक्ति भर यत्न करो, कि वे ईश्वर के पास आ जावें। उस एंजिनवाले ने कहा "केवल इतना ही?" यह काम तो मैं अच्छी तरह कर सकूंगा, और वह तुरन्त इस नियम के अनुसार अपना कार्य करने लगा। थोड़े समय के पीछे मिशन हाल में एक मनुष्य आया जो प्रभु के पास आना चाहता था। उस ने मान लिया, कि मैं केवल एक एंजिन साफ़ करनेवाला हूं और मैं चाहता हूं कि प्रभु यीशु ख्रीष्ट को ग्रहण करूं क्योंकि मेरे

साथ एंजिन चलानेवाले ने मेरे लिये प्रार्थना किई है। यह एंजिन चलानेवाले का पहिला फल था।

एक बैबल क्लास में एक लड़की को जो नौकरनी थी मिशनरी काम करने की आत्मा मिली। उस ने प्रार्थना की क्लास को बड़ी सहायता का द्वारा समझा, और कहा कि मैं औरों को भी इस में बुलाऊंगी और कदाचित उन को बचा सकूंगी। उसने अपने घर ही की बगल में एक नौकर को बैबल क्लास में भागी होने को कहा और वह इस कार्य में सफल हुई। तब उस ने एक और नौकर को जो दूसरी बगल में रहता था क्लास में बुलाया। वहां पर भी प्रार्थना का उत्तर मिला। अब वही दासी अपने अड़ोस पड़ोस में काम कर रही है और बारह घरों में से छः घरों की एक एक लड़की उस क्लास में सम्मिलित हो गईं।

"सेवकाइयां तो कई प्रकार की हैं परंतु परमेश्वर एक ही है जो सभों में सब कुछ करता है"। ऐसा हुआ कि हिन्दुस्तान में भी एक देशी स्कूल मास्टर के मन में यह मिशनरी जोश उत्पन्न हुआ। उसने अपने संगी तीन मास्टरों को बुला के कहा कि आओ हम इस पाठशाला के बालकों के लिए प्रार्थना करें हर बुधवार को ये चारों खाली स्कूल में ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि हे परमात्मा इन बालकों के मन में अपना पवित्रात्मा भेज। ये लड़के एक एक करके अपनी आत्मा की चिन्ता करने लगें, और जब प्रभु के पास पहुँचाये गये, तब उन्हों ने भी यह मन्सूबा बांधा कि और और लड़कों के लिये प्रार्थना करें। तब

तो बहुत बालक प्रभु यीशु की ओर फिर गये। विश्वास की प्रार्थना के सन्मुख प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक जन को दबना पड़ता है।

यदि आत्मा बचाने का शौक़ किसी के जीवन का नियम हो जाय तब देखिये कि कितने अधिक अवसर उसे अपने साधारण जीवन में मिलेंगे और यह उस का मानो साधारण काम बन जावेगा।

एक कुलीन स्त्री ने दूसरी से कहा कि मैं अपने "इन जलसों" से प्रसन्न नहीं हूं क्योंकि हम इधर उधर की गप्प शप्प में और गाने बजाने में मन लगाते हैं। सचमुच उस में बहुत समय व्यर्थ जाता है। हम क्यों न अपने मेहमानों के लिये कल प्रार्थना करें और कुछ काम करना आरंभ करें जिससे उन पर अधिक अच्छा असर पड़े।

दूसरी ने कहा बहुत अच्छी बात है मैं एक कोने में बैठ कर प्रार्थना करूंगी और दूसरे कोने में तुम, करो और तब हम देखेंगे कि इस प्रार्थना की कड़ी से औरों को लाभ होगा या नहीं। थोड़े समय के पश्चात् ईश्वर का अनुग्रह उन लोगों में आने लगा वे इस विषय पर बात चीत करने लगीं और धीरे धीरे बहुत सी पूर्ण रीति से इस अनुग्रह की खोजी बन गईं।

एक समय एक बैबल क्लास की शिक्षक अपनी लड़कियों के विषय में सोच रही थी। उसे तुरन्त एक लड़की स्मरण आई जो सांसारिक और अति चंचल थी। वह अपने मन में कहने लगी कि उस पर कुछ भी मेरा असर नहीं। मैं उसे कैसे प्राप्त करूं तब उस ने यह उपाय सोचा कि मैं उसे चा पीने के बुलाऊंगी।

उस के कहने से वह लड़की आई तब उस ने उस से बातचीत किई जिस का उत्तर उस लड़की ने यह दिया कि "तब तो मुझे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा" अर्थात तमाशा देखना ताश खेलना आदि जिसे मैं चाहती हूं। तब उस पाठिका ने उत्तर दिया यह तो अवश्य होगा। पर बहिन जो कुछ करना है अभी चुन लो और मैं तुम को केवल २० मिनट का अवसर देकर जाती हूं सो इस अवसर में फैसला कर झट मुझे बताओ। जब वह फिर लौटकर आई तब उस लड़की ने ऊपर देखकर धीमे स्वर से कहा कि "मैं केवल यीशु के पीछे चलूंगी" इस का परिणाम यह हुआ कि एक महीने के पीछे उस लड़की के मालिक ने उस से कहा कि मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूं कि अब तुम्हारे काम और बर्ताव में बदलाहट हो गई है एक महीना पहिले मैं ने यह ठान लिया था कि तुम को छुट्टी दे दूं पर अब तो मेरे मन से यह बात उठ गई। उस लड़की ने कहा कि साहिब एक महीने से मैं ने प्रभु यीशु खीष्ट को अपने मन में स्थान दिया कि वह मेरे कार्य और जीवन में अगुवाई करे। उस के स्वामी ने कहा अहा मैं तो नास्तिक हूं और मैं इस बात को कुछ नहीं जानता हूं पर यद्यपि इस मनुष्य ने इस आशीष को नहीं जाना तौभी औरों ने अच्छी रीति से समझा और आशीष की धारा वह निकली जिस का फल यह हुआ कि लगभग १०० लोगों ने जो उस दूकान में काम करते थे। प्रभु यीशु को अपना मुक्ति-दाता मान लिया। यह फल उसी लड़की के द्वारा से और उन के द्वारा

से भी जिन्हें उस लड़की ने प्रभु के लिये कमाया प्राप्त हुआ और आज वही लड़की विदेश में मिशनरी का काम करती है।

हमारे पढ़नेहारों में से कदाचित किसी ने न सुना होगा कि एक डाक्टर साहिब ने अपने रोगियों के लिये एक बिलकुल नई दवाई का उपयोग किया। इस डाक्टर साहिब के लिये "एक एक करके कार्य करनेवाली सभा" ने १८ बरस तक प्रार्थना किई थी। एक समय वह एक मीटिंग में गया और वहां उस ने प्रभु को पाया। तब वह तुरन्त अपनी स्त्री को भी अपने साथ ले गया और वह भी बच गई। तब उस ने अपनी चाची को भी दूर से बुलवाया और वह आई पर जब फिर अपने घर जाने लगी, तब वह भी मसीह को अपने संग ले गई। तब इस डाक्टर साहिब ने अपना ध्यान अपने रोगियों की ओर फेरा। और बड़ी सावधानी और चतुराई से उन रोगियों को इस आत्मिक दान के विषय में सिखाया कि वे प्रभु यीशु खीष्ट के अनुग्रह से अपने मनों में शान्ति पाकर अपने रोगों में धीरज प्राप्त कर सकते हैं और इस प्रकार कार्य करते करते उस ने बहुत प्राणियों को प्रभु की ओर फेर लिया।

एक और कथा है कि किसी नगर की गली में एक मोची की दुकान थी। एक कुलीन स्त्री सदा उस की दुकान पर आया जाया करती थी। वह स्त्री चाहती थी कि कोई ऐसा समय मिले कि जिस में वह इस मोची से बातचीत करे पर इस कारण कि दुकान एक चौराहे पर थी सदा लोगों की

भीड़ लगी रहती थी। लोग नाना प्रकार की बकवाद और निन्दा की बहस किया करते थे और इस स्त्री को कोई ऐसा अवसर न मिला, कि उस मोची से प्रभु यीशु की बातचीत कर सके। अन्त में उस ने एक दिन उसे अकेले पाकर प्रभु के विषय में उस से बातचीत किई। उस मोची ने कहा, मेम साहिब मैं इन बातों के लिये आप का धन्य मानता हूं पर मैं, यह जो आप कहती हैं नहीं कर सकता क्योंकि मैं जानता हूं कि यदि मैं ईश्वर को अपने मन में लूं तो मुझे इस दुकान का सब कार्य बदलना पड़ेगा सो मैं ऐसा नहीं कर सकता उस स्त्री ने अपने मन में सोचा कि भला इस मोची के मन में यह बात बैठ तो गई उस ने तुरन्त जाकर प्रभु से प्रार्थना किई और यों प्रार्थना करते करते वह एक दिन फिर उस की दुकान पर गई पर वहाँ क्या देखती है कि दुकान में पहिले के समान भीड़ नहीं है और वह मोची आनन्द से अपनी कथा आप उस स्त्री से कह रहा है। देखिये प्रभु की आत्मा का बल और फल कि इस मोची की चमड़े की दुकान बैकुंठ बन गई और जहां हर प्रकार के बुरे लोगों की भीड़ लगी रहती थी वहां अब दूतगणों की भीड़ हो गई। धीरज से प्रार्थना में लगे रहना और पूरी रीति से लोगों से बर्ताव भी करना इन्हीं दोनों उपायों का यह प्रतिफल हुआ।

अवसर जो हम खो देते हैं उस के लिये पीछे पछताना पड़ता है।

लण्डन नगर में एक समय एक कुलीन स्त्री अचानक मरने पर हो गई। उस का उपदेशक बुलाया गया। और उस से कहा

गया कि प्रार्थना करो, कि यह स्त्री वच जाय। पर उपदेशक ने उस से कहा कि आप तो ईसाई हैं और मरने से लाभ होता है उस स्त्री ने उत्तर दिया "हां मैं ४० बरस से खीष्टयान तो हूं पर मैं ने एक भी प्राणी खीष्ट की ओर नहीं फेरा और इस लिये मैं चाहती हूं कि केवल एक और अवसर मुझे मिले" थोड़े दिनों के बाद वह उपदेशक फिर वहां गया और सुना कि अन्त में वह यह कह कर मर गई "हाय कि एक अवसर और मिलता" प्रिय पढ़नेहारो क्या हम भी ऐसे ही असावधान रहेंगे?

अध्याय ५

आत्माओं को ईश्वर की ओर फिराने का साज वा तैयारी

(मत्ती २८:१८-२०, लूक २४:४६; योहन ७:३८, प्रेरितों की क्रिया १:४,८, लूक ११:१३)

जब पवित्रात्मा की महिमा मुक्त धारा हृदय की गहराई में होकर बहती है तो निरन्तर मन और इच्छा और बुद्धि पवित्र रहती और पाप और उस की शक्ति से पूर्ण निर्बन्धता मिलती है।

जो लोग आत्माओं के कमाने का काम करते हैं उन का अनुभव इन बातों के विषय में कदापि कम न होना चाहिये।

हज़ारों हज़ार खीष्टयान हैं जिनको इस बात से आश्चर्य्य होता है कि परमेश्वर के राज्य में उन का जीवन बिलकुल निष्फल तथा निकम्मा क्यों है, वे देखते हैं कि और लोग प्रभु

यीशु ख्रीष्ट के लिये सफलतापूर्वक काम करते हैं, औरों की बैबल क्लास के लोग मण्डली में मिलाये जाते हैं। बालक, यीशु के पास पहुंचाये जाते और अन्य धर्म्मी लोग अपना धर्म छोड़कर ख्रीष्ट को ग्रहण करते हैं। वे सुनते हैं कि अमुक जन की प्रार्थना का उत्तर अद्भुत रीति से मिला। अमुक जन की चिट्ठी से बहुत लोगों के मन जो कठोर और ख्रीष्ट से दूर थे छिद गये और पिघल गये। अमुक जन जो घर घर भेंट करता फिरता है उस का फल यह हुआ कि उन घरों के लोगों में अद्भुत आत्मिक बदलाहट हो गई। ये सब बातें वे सुनते और देखते हैं पर अपने में वे आप कुछ काम करने की शक्ति नहीं रखते क्योंकि प्रार्थनाओं के उत्तर न मिलने के कारण उन के मन उदास रहते और वे अनेक आत्मिक घटी के कारण लज्जित रहते हैं।

कोई अभिलाषी जन उन को अनुचित समय में नहीं ढूंढ़ता, कोई उन को अचानक बुलाने नहीं आता कि चल कर हमारे घर में बीमारों से भेंट कीजिये। कभी उन को अवसर नहीं मिला, कि किसी पश्चात्ताप करनेहारे जन से मिलें और बातचीत करें। वे संसार के मुक्तिदाता प्रभु यीशु ख्रीष्ट के अनुगामी तो कहलाते हैं पर तौ भी अपने गुरु को मनुष्यों पर प्रगट करने में बलहीन हैं, क्योंकि वे नहीं जानते हैं कि उन की दशा ऐसी होवे। इसी लिये यह लेख उन की सहायता के अभिप्राय से लिखा गया है।

प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने कहा "मत डर" अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा पावल प्रेरित ने कहा "परमेश्वर का धन्यवाद हो जो

सदा हम को खीष्ट में जय देता और हर स्थान में अपने ज्ञान का प्रकाश हमारे द्वारा प्रगट करता है" यही बात है जिसे ये बलहीन खीष्टयान करने की लालसा करते हैं। परन्तु उन के निष्फल जीवन को फलवन्त बनाने और आत्माओं को कमाने में उन को जयवन्त करने के लिये किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता है।

पाप से पूरी निर्बन्धता:—प्रभु यीशु खीष्ट के लोहू के द्वारा भीतरी मनुष्यत्व में जय, सच्चाई, पवित्रता, जीवन और सामर्थ्य के आत्मा का हृदय में बास, आदि बातें आवश्यक हैं। पाप चाहे कैसे ही गुप्त रूप में क्यों न हो, शक्ति पाने के मार्ग में रुकावट का कारण हो जाता है। यदि किसी जन के मन में कोई प्यारी बुरी आदत होय तो उस जन के लिये परमेश्वर का दर्शन पाना असम्भव है। डाह वा ईर्षा तथा क्षमा न करने का मन पूर्ण प्रेम के आत्मा के लिये कंटक है। द्वेष वा द्रोह तथा कड़ुवाहट और बदला लेने की इच्छा बिश्वासरूपी पक्षी के पंख तोड़ देते और सच्ची प्रार्थना की पुकार का गला घोंट देते हैं। किसी वस्तु का दाम चुकाने में अथवा किसी की लिई हुई वस्तु को लौटाने में विवेक को कठोर करने के कारण बहुतेरे लोगों ने अनुग्रह और आशीष की आनेहारी धारा को अपने से दूर करके दूसरी तरफ़ बहा दिया।

यह देखकर बहुत शोक मालूम होता है कि बहुतेरी प्रार्थनाएं इस प्रकार की होती हैं जिनका उत्तर प्राप्त नहीं हो

सकता । कई एक प्रार्थनाएं मन की बड़ी लालसा से किई जाती हैं । कई एक प्रार्थनाएं परमेश्वर के सबसे उत्तम दान के लिये किई जाती हैं बल्कि कई एक प्रार्थनाएं जो प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम में और उस के वचन के अनुसार मांगी जाती हैं उन का भी उत्तर परमेश्वर नहीं दे सकता क्योंकि प्रार्थना करनेहारे के मन का मार्ग रुका हुआ है ।

जो जन औरों से अन्याय करता अथवा औरों का अनादर करता है, उस को विश्वास के सामर्थी दान से क्या लाभ हो सकता है । क्या किसी जन को परमेश्वर तथा मनुष्य की ओर प्रेम का अभिसमा मिल सकता है जिसके मन में स्वार्थ उच्चपद और बड़ाई का ख्याल हो ? पेन्तिकोष्ट का आत्मा उस जन पर किस तरह उंडेला जा सकता है जो आज तक कभी दीनता से कलवरी तक गया ही न हो ।

बहुधा इस प्रकार की प्रार्थना किई जाती है कि "मुझ को भर दे और मुझे उठा बड़ा कर" और परमेश्वर का उत्तर बहुधा यह होता है कि "अपने को खाली कर और नीचा हो ।"

फलवन्त सेवकाई के लिये सात बातों की आवश्यकता है ।

(१) मन की पवित्रता (२) धार्म्मिक जीवन (३) परमेश्वर के वचन में भक्ति (४) पवित्रात्मा की पूर्ण आज्ञा पालन (५) परमेश्वर की सहभागिता (६) प्रार्थना में सामर्थ (७) आत्माओं के लिये लालसा ।

अन्तःकरण और जीवन की पवित्रता ही पवित्रात्मा की व्यवस्था है। और जब लों हम इस व्यवस्था को पालन न करें तब लों हम उस के काम के योग्य नहीं हो सकते हैं। इस व्यवस्था के पालन करने में बहुतेरों के लिये पहली सीढ़ी कदाचित यह होगी कि वे अपने साथियों में मेल कर लें।

प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने प्रेम की शिक्षा देते हुए उस के दो भाग किये (मत्ती ५: २३, २४) "सो यदि तू अपना चढ़ावा वेदी के पास लावे और और वहाँ स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरी ओर कुछ है तो अपना चढ़ावा वेदी के साम्हने छोड़ के चला जा, पहिले अपने भाई से मिलाप कर तब आके अपना चढ़ावा चढ़ा" केवल इतना ही बस नहीं है कि परमेश्वर से अपराधों का अंगीकार किया जावे। उस मनुष्य के सन्मुख भी अंगीकार किया जावे जिस का अपराध किया गया है और उस से मिलाप करें। केवल तबही हम अपनी आत्मा के लिये प्रार्थना में परमेश्वर के निकट पहुंच सकते हैं।

इसी शिक्षा का दूसरा भाग ४४ और ४५ पदों में पाया जाता है जहाँ हम सीखते हैं कि परमेश्वर का प्रेम पवित्रात्मा द्वारा मन में इस प्रकार फैलाया जावे कि शत्रु भी ख्रीष्ट के निमित्त प्यारा हो जावे।

एक दिन मैं प्रार्थना की मीटिंग कर रहा था। उस मीटिंग में एक स्त्री थी। जिस का बहुत महीने पहिले किसी स्त्री से झगड़ा हो गया था। इस स्त्री ने बहुत प्रार्थना किई परन्तु कुछ

उत्तर न मिला, सो इसने जाना कि मेरी प्रार्थना का उत्तर न मिलने का कारण वही झगड़ा है। यद्यपि मेरे जानते भर मैं ने उस स्त्री की कुछ हानि ते नहीं की है, तौभी हमारे बीच में जो फूट है सो स्त्रीष्ट के आत्मा के विरुद्ध है। सो वह उस मीटिंग से सीधी घर को गई और उस मित्र को चिट्ठी लिखी और उस में बतलाया कि आज रात को परमेश्वर ने मुझ पर यह बात प्रगट किई है और जो कुछ मुझ से आप का अपराध या हानि हुई है उस के लिये मैं विन्तीपूर्वक आप से क्षमा मांगती हूं। दे दिन के पीछे उस ने उस चिट्ठी का उत्तर पाया जिसमें लिखा था कि "आप की चिट्ठी के लिये मैं आप का धन्यवाद करती हूं जो कुछ काम पवित्रात्मा ने आप के मन में किया सोई पिछले नये साल की रात को मेरे मन में भी हुआ पर मैं ने अपने घमंड के कारण उस की आज्ञा न मानी" इस प्रकार दे स्त्रियों के जीवन से रुकावट दूर हो गई।

एक और स्त्री मेरे पास आकर एक दिन पूछने लगी कि "क्या कारण है कि मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिल सकता? मुझ को प्रार्थना का उत्तर मिला करता था परंतु कुछ बरसों से ऐसा नहीं होता"। थोड़ी देर उस से बातचीत करने के बाद मालूम हुआ कि उस का भी किसी से झगड़ा था और ईर्षा और कड़वाहट के कारण आशीष का द्वार बन्द गया था।

इन दोनों दशाओं में स्वर्ग तो खुला हुआ था परन्तु

विलम्ब करने के कारण वे दोनों बन्धुवाई के अधिक गहरे दलदल में फंस सी जाती थीं। ईर्षा और कड़वाहट के बीज से ऐसे बड़े और बलवन्त पेड़ हो जाते हैं जो अंत को परमेश्वर पिता का मुख भी छिपा देते हैं। आशा केवल इतनी ही है कि प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा अन्तःकरण के पास से पूर्ण छुटकारा और सेंतमेंत निर्बन्धता प्राप्त कर लें।

क्या कोई प्रभु यीशु ख्रीष्ट की शिष्या है जो इस बात को पढ़कर अपने में मालूम करती है कि मेरे अन्तःकरण में पवित्रात्मा न होने के कारण प्रार्थना की स्वतंत्रता और आत्माओं को कमाने की शक्ति पाने का द्वार बंद है। तो आप से मेरी यह बिनती है कि यदि आप को पूरा निश्चय हो गया है कि पूर्ण निर्बन्धता वा मुक्ति क्या है तो आप उसे इसी घड़ी ग्रहण क्यों नहीं करतीं।

पहिली बात यह है कि क्या आप को संतोष है कि परमेश्वर का बचन खुदी और और पाप के ऊपर जय देता है और कि प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा पापों की क्षमा और ईश्वर से मेल होता है। (देखो १ योहन ३:४—८, योहन ३६: २५—२७, २ करि० ६:१६—१८, ७:१, १ थिसलोनिका ४:३, ५:२३—२४)

२. क्या आप को उस की आवश्यकता मालूम होती है ?

३. क्या आप को निश्चय हो गया है कि परमेश्वर इस

प्रकार का अनुभव देने के लिये योग्य और राज़ी है ? (गलाती १:४ इफिसी १:४)

४. क्या आप अपने प्रत्येक पाप को और भूल चूक को पूरी रीति से परमेश्वर को सौंप देने के लिये तैयार हैं कि वही सारी बातों में आप का जीवन होवे और जीवन के हर एक काम में उसी का अधिकार और आज्ञा चले।

५. क्या आप इसी घड़ी और इसी जगह राज़ी हैं कि इस अनुभव के लिये परमेश्वर पर पूरा भरोसा रक्खें। कि ख्रीष्ट का लोहू सारे पापों को शुद्ध करता है और कि पवित्रात्मा तुरन्त और पूरी रीति से आप के शुद्ध किये हुए हृदय पर अपना अधिकार जमाता है कि उस को अपना मन्दिर और निवासस्थान बनावे जिससे आप की प्रत्येक शक्ति के द्वारा अपनी पवित्रता और प्रेम की पूर्ण इच्छा पूरी करे ?

६. क्या आप तैयार हैं कि आप के हृदय में परमेश्वर का जो काम हुआ है उस की साक्षी देवें जैसा कि पवित्रात्मा आप को सिखावे और बतावे ?

यदि आप ने इन में से प्रत्येक काम किया है तो आप ईश्वर की प्रतिज्ञारूपी चटान पर चढ़ चुकी हैं। प्रभु यीशु ख्रीष्ट के बहुमूल्य लहू के द्वारा परमेश्वर की बाट देखिये। और पवित्रात्मा जिसे आप खोजती हैं अचानक अपने मंदिर में आवेगा और आप ऐसी निर्बन्धता में प्रवेश करेंगी जिससे आप सफलता से आत्मा कमानेहारी बन जावेंगी।

प्राय: २० वर्ष हुए मैं आधी रात को एक मीटिंग कर रहा था। उस मीटिंग में किसी जहाज़ का एक अफ़सर था जो शान्त स्वभाव और भक्त ख्रीष्टियान था। परंतु उसे अब लों इस बात का निश्चय न था कि मेरे पाप क्षमा किये गये हैं। उस रात उस ने अपना दिल परमेश्वर को दे दिया और तब से उस को न केवल इस बात का निश्चय हुआ कि मैं ने मुक्ति पाई वरन औरों को ख्रीष्ट के पास लाने का सामर्थ्य भी पाया। आत्माओं को कमाने के लिये परमेश्वर ने उसे बुद्धि दी। पहिला काम उस ने यह किया कि अपने जहाज़ पर जाकर यह पद लिखकर चिपका दिया कि "सारे कामों में परमेश्वर प्रधान वा श्रेष्ठ होवे।" इससे उस को अवसर मिला कि महाराज एडवर्ड और महारानी अलेकज़ेन्ड्रा के सामने साक्षी देवे। थोड़े दिन बाद उस के मन में बड़ी इच्छा उत्पन्न हुई कि अन्य धर्म्मियों को ख्रीष्ट के लिये कमावे सो उसने अपने अधिकारियों को लिखा कि मैं जहाज़ का काम छोड़ना चाहता हूं कि अपना जीवन चीन देश के लिये बिताऊं। जब वह चीन देश जाने को था, तब उस ने मुझे लिखा कि "मैं पवित्रात्मा द्वारा अभिषिक्त होकर जा रहा हूं।"

नौ वर्ष बाद वह इंग्लिस्तान को फिर आया और मेरे घर ठहरा और बतलाया कि किस प्रकार वह पवित्रात्मा के आधीन रहा। चीन की भाषा सीखी, लोगों को ख्रीष्ट के पास लाया, गिरजा बनवाया, और बहुत से अन्य धर्म्मियों को ख्रीष्ट के

लिये कमाकर कैसा आनन्दित था। तब वह फिर चीन को लौट गया और वहां से राजाओं के राजा अर्थात् परमेश्वर के सन्मुख उपस्थित हुआ। परमेश्वर की भरपूरी से भरपूर हो जाने के लिये उस ने अपना सब कुछ त्याग दिया। क्या जो दाम उस ने इस अनुग्रह के लिये दिया बहुत था?

अध्याय ६

सामर्थ्ययुक्त प्रार्थना

"तुम जो यहोवाह के स्मरण करनेहारे हो विश्राम न लेओ न उस को विश्राम लेने देओ।" (यशायाह ६२:६)

"और जो साहस हम को उस के यहाँ होता है सो यह है कि जो हम लोग उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगें तो वह हमारी सुनता है और जो हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं कि मांगी हुई वस्तु जो हम ने उस से मांगी है हमें मिली है" (१ योहन ५:१४-१५)

एक समय गिरजे में मैं एक स्त्री से बात कर रहा था, जिसने उदास होकर पूछा "मुझ को बतलाइये कि सामर्थ्ययुक्त प्रार्थना किस प्रकार करनी चाहिये। मेरे पास पचास नाम लिखे हुए हैं। जिनके लिये मैं बीस वर्ष से प्रार्थना कर रही हूं परन्तु अब तक उत्तर नहीं मिला।"

यह स्त्री बिलकुल सच्ची थी। जान पड़ता था, कि अपने

सारे जीवन में ईश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये वह बहुत उत्सुक थी; तौभी संसार में उस के ऐसे इरादे होते हुए भी उस की प्रार्थना कार्य्यकारी नहीं थी।

यह युग बड़े काम काज का है। अनेक लोग आनन्द रहित परिश्रम करते करते पिसे जाते हैं। सफलता काम में प्राप्त करनेहारा वह नहीं है जो अत्यन्त परिश्रम करता परन्तु वही है जो उत्तम रीति से प्रार्थना करता है। सच्ची प्रार्थना में कुछ न कुछ परमेश्वर के लक्षण होते हैं जिसका असर होता है। इस प्रकार की प्रार्थना कार्यकारी तथा प्रभावशाली होती। उस का परिणाम दिखाई देता और उससे अद्भुत काम होता है। जो पवित्रात्मा में होके प्रार्थना करता है सो उस समय के लिये प्रार्थना को अपने जीवन का एक मात्र उद्देश करता है वह अपने तईं उस के लिये पूर्ण रीति से दे देता है अर्थात अपना मन, हृदय और इच्छा उस में लगा देता है, इसी से उस की प्रार्थना सफल होती और वह उस का उत्तर पाता है।

ईश्वर के राज्य में सब से कठिन काम जो है सो प्रार्थना करने का काम है। परंतु उस में सफलता प्राप्त करने के कुछ नियम हैं जिनसे उस का सामर्थ्ययुक्त होना, निश्चित हो जाता है। जो प्रार्थना करनेहारा है उस को इन नियमों का अध्ययन करना चाहिये। जिससे उस की प्रार्थना व्यर्थ न हो। संक्षेप में वे ये हैं :—

(१) विशेष उद्देश ।

(२) पवित्रात्मा से सिखाई हुई इच्छा ।

(३) परमेश्वर के वचन का अध्ययन ।

(४) मन की शुद्धता ।

(५) अटल विश्वास ।

(६) ख्रीष्ट के नाम के द्वारा ।

(१) विशेष उद्देश

उद्देश रहित प्रार्थना का वही परिणाम होता है जो बेनिशाना बंदूक चलाने का होता है । बंदूक चलाना चाहे आरोग्यदायक कसरत हो तो हो परंतु यदि आप किसी विशेष स्थान का निशाना लिये बिना योंही बंदूक चलाने में अपना जीवन बिता दें तो इस से समय और बारूद गोली की बहुत हानि होगी ।

मेरा एक पुराना मित्र जो बहुत प्रार्थना किया करता है कहता है कि "जैसा साधारण पापांगिकार से कुछ लाभ नहीं होता वैसे ही साधारण प्रार्थना से भी कुछ लाभ नहीं है दोनों एक सा निष्फल हैं । केवल जब हम किसी विशेष उद्देश से प्रार्थना करते हैं तब वह कार्यकारी होने लगती है । साधारण और उद्देश रहित प्रार्थना का उत्तर कब मिलेगा । सो हम कभी नहीं जानते । और ऐसी प्रार्थना से लाभ नहीं" ।

यदि आप किसी साधारण प्रार्थना की मीटिंग में जायँ तो आप देखेंगे कि प्रार्थना में कितना वृथा परिश्रम किया जाता है ।

बहुतेरे प्रार्थना करनेहारे संसार भर की वस्तुओं के नाम बक जाते हैं और एक बिनती को दूसरी के साथ ऐसी मिला देते हैं कि उनको खुद भी स्पष्ट ज्ञान नहीं रहता कि हम ने क्या मांगा है। सचमुच यदि परमेश्वर ऐसी प्रार्थनाओं का उत्तर तुरन्त दे देवे, तो वह मांगनेहारा बड़े अचम्भे में पड़ जावेगा। यदि उसी प्रकार हम अपने किसी मित्र से सहायता मांगें वा सलाह पूंछें तो वह शीघ्र ही कहेगा कि "मुझे ठीक ठीक बतलाओ तुम क्या चाहते हो" ईश्वर की ओर यह हमारा कर्त्तव्यकर्म है कि, जब हम उस से कुछ मांगते हैं तो साफ़ साफ़ और विशेष बातों के लिये बिनती करें "यदि हमारी प्रार्थनाएं सामर्थ्ययुक्त हों तो अवश्य है कि उन का कोई उद्देश हो और उद्देश सहित प्रार्थना तब ही हो सकती है जब कि पवित्र आत्मा हम को सिखावे"।

२. पवित्र आत्मा से अगुआई प्राप्त की हुई इच्छा"

यह अत्यन्त ही आवश्यक है कि पवित्र आत्मा के द्वारा हमारी इच्छा की प्रेरणा और उत्तेजन हो। "हम नहीं जानते हैं कि कौन सी प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिये" हमारे विचार सीमाबद्ध हैं इस बात के विषय कि ईश्वर हमें सब कुछ दे सकता है। हमारे विचार निर्बल हैं हमारा अभिप्राय स्वार्थी है, हमारे निर्णय अपरिपक हैं। हमारी लालसा शीघ्र ही घट जाती है। ऐसी अवस्था में यह अत्यन्त आवश्यक है कि पवित्र आत्मा हम में हो जो हमारे विचारों पर अधिकार रक्खे उन को तुच्छ

दशा में से निकाले, स्वार्थ की बातें दूर करके उन को शुद्ध करे और उन को जीवित, सावधान, फुरतीले और दृढ़ बनावे।

पवित्रात्मा आप ही अकथ्य हाय मार मारके हमारे लिये ईश्वर की इच्छा के समान प्रार्थना करता है (रोमि० ८:२६,२७)

जिस अभिप्राय से हम प्रार्थना करते हैं सो यदि ठीक नहीं तो बहुधा प्रार्थना सामर्थयुक्त नहीं होती। हम किसी जन के लिये प्रार्थना करते हैं और कभी कभी यह प्रार्थना इस अभिप्राय से करते हैं कि हम को शक्ति मिले। अथवा उस जन का घराना सुख पावे। परन्तु इस अभिप्राय से प्रार्थना नहीं करते कि यह ईश्वर की इच्छा है कि वह आत्मा त्राण पावे इस लिये यह बिलकुल उचित है (याकूब ४:३) प्रार्थना तो ठीक है उस को बदलने की आवश्यकता नहीं परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि हमारा अभिप्राय शुद्ध किया जावे। यह काम पवित्रात्मा के सिवाय और कोई नहीं कर सकता।

जब हमारी इच्छा मर जाती और हम अपनी प्रार्थना बंद कर देते वा भूल जाते हैं तो पवित्र आत्मा को जो हमारा साथी है दुःख होता है। वही केवल जो प्रार्थना की आवश्यकता जानता है, जो आप ही हमारे लिये "अकथ्य हाय मार मारकर प्रार्थना करता है" सो उस जन के लिये जो अपनी निज आवश्यकता के लिये प्रार्थना करने को जागता नहीं रहता और जो दूसरों के लिये प्रार्थना करने में थक जाता है अत्यन्त शोकित होता है।

केवल पराक्रांत आप ही हमारे आत्मिक जीवन को ईश्वरीय प्रभाव में ऐसा भिगा सकता है कि हमारी इच्छा शुद्ध और बलवन्त रह सकती, सांसारिक और स्वार्थी अभिप्राय दूर होते और वह प्रातःकाल की नाईं सदा ताज़ी रह सकती है।

"तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी क्योंकि तुम सारे मन से मेरे पास आओगे और मुझ यहोवाह की यह वाणी है कि मैं तुम ढूंढ़नेहारों को मिलूंगा। (यिर्य० २९: १३, १४)

३. परमेश्वर के बचन का अध्ययन ।।

परमेश्वर का बचन कैसा प्रबल है। धर्मपुस्तक के अध्ययन और प्रार्थना का जो परस्पर सम्बन्ध है उस को वह कैसी स्पष्टता से दिखाता है। देखो नितिबचन २८: ९, "जो अपना कान ऐसा फेर लेता है कि व्यवस्था न सुन सके उस की प्रार्थना भी घिनौनी ठहरती है"।

जिस द्वारा से परमेश्वर मनुष्यों से बात करता है सो उस का बचन है।

जिस द्वारा से मनुष्य परमेश्वर से बात करता है सो प्रार्थना है दोनों के गुणकारी होने के लिये पवित्र आत्मा की सेवकाई अत्यन्त आवश्यक है।

ईश्वर के बचन का न केवल मिलान करना वा भेद निकालना, न केवल उस की टीका करना वा मन में संचय करना चाहिये परन्तु जीवते बीज के समान उसे हृदय में रोपना चाहिये। कि पवित्र आत्मा की शक्ति से उत्तेजित होकर वह

बढ़े, फूले, और पवित्र जीवन रूपी फल लावे। परमेश्वर के वचन को हमारे भीतर काम करना चाहिये।

पवित्र आत्मा को धर्म्मपुस्तक की प्रतिज्ञाएं अपने लिये प्रकाशित करने दो। बैबल की शिक्षा के प्रत्येक बीज के भीतरी गुप्त जीवन को प्रगट करने दो। और उस बीज को अपनी आत्मा में फलवन्त होने दो।

प्रभु यीशु खीष्ट के साथ जीवता मेल और मन में परमेश्वर के वचन का संग्रह अवश्य है।

"जो तुम मुझ में रहो और मेरी बातें तुम में रहें तो जो कुछ तुम्हारी इच्छा होय सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा।" (योहन १५:७)

४. मन की शुद्धता।

"इसी में हम उस के आगे अपने अपने मन को समझावें। क्योंकि जो हमारा मन हमें दोष देवे तो जानते हैं कि ईश्वर हमारे मन से बड़ा है और सब कुछ जानता है। हे प्यारो जो हमारा मन हमें दोष न देवे तो हमें ईश्वर के सन्मुख साहस है और हम जो कुछ मांगते हैं उस से पाते हैं।" (१ योहन ३:१९-२२)

ईश्वर के सन्मुख पहुंचने का जो आप का साहस है सो यदि किसी गुप्त पाप के कारण हर लिया जाता है सो आप की प्रार्थना की शक्ति भी मारी जाती है। तब आप महा पवित्र स्थान में

प्रवेश नहीं कर सकते। और न सिंहासन पर विराजमान मनुष्य के पुत्र पर दृष्टि करने का आप साहस कर सकते हैं। कलवरी के निकट आप का स्थान तुच्छ होता और आप पाप की लज्जा और अधमता मालूम करते हैं। "मैं खीष्ट के संग क्रूश पर चढ़ाया गया।" प्रभु यीशु खीष्ट आप के सारे प्रेम और इच्छा में इस प्रकार का अनुभव उत्पन्न कर सकता और अपने जी उठने के द्वारा परमेश्वर के साथ आप का नया मेल करा सकता है। तब आप को वह पवित्र साहस होगा, जिससे आप उस का मुख देख सकते और उस महान मुक्तिदाता से महान वरदान मांगने में संकोच नहीं करेंगे।

५. अटल विश्वास।

"वह बिश्वास से मांगे और कुछ संदेह न रक्खे क्योंकि जो संदेह रखता है सो समुद्र की लहरों के समान है। जो ब्यार से चलाई जाती और डुलाई जाती है। वह मनुष्य न समझे कि मैं प्रभु से कुछ पाऊंगा" (याकूब १:६-७)

हृदय बुद्धि इच्छा अभिप्राय—ये सब चाहे ठीक हों परंतु यदि बिश्वास न हो तो युद्ध में हार जावेंगे। बिश्वास का संबन्ध विशेष कर ईश्वर से है। हमारे बिश्वास की घटी का बड़ा कारण यह है कि हम ईश्वर को उचित रीति से जानते नहीं और न उस से व्यवहार रखते हैं। जो जन न केवल प्रार्थना का उत्तर ढूंढ़ता परंतु पहिले ईश्वर को खोजता, जो प्रार्थना का उत्तर

देनेहारा है सो यह जानने की शक्ति पाता है कि जो कुछ मैं ने ईश्वर से मांगा सो पा चुका हूं ।

आप अपने हृदय को अविश्वास की छाया से धुंधला करें इस से बढ़कर और क्या ईश्वर का निरादर हो सकता है । केवल "जयवन्त विश्वास" ही राज्य का अधिकारी हो सकता है ।

जयवन्त विश्वास क्या है ।

आश्चर्यकर्म करनेहारे ईश्वर पर साहस से भरोसा रखना जयवन्त विश्वास है । हम समझते हैं कि ईश्वर का हाथ छोटा हो गया है रथफोर्ड साहिब कहते हैं कि "ईश्वर के पास प्रत्येक ताले की सहस्र कुंजियां हैं" हमारे सीमा वृद्ध विचार होने के कारण हम समझते हैं कि ईश्वर के पास हर एक ताले की दस दस कुंजियां हैं और कदाचित उस में से भी अनेक पर मोर्चा लगा है। जिस आत्मा के लिये हम प्रार्थना करते हैं उस की सृजनहार के हाथ के पास ही ९९० और कुंजियां रखी हैं जिन्हें हम नहीं देख सकते। और यदि ऐसा न भी होता तो क्या परमेश्वर अपने हाथ से मोर्चा लगी हुई कुंजी को चिकना नहीं कर सकता है कि जिस के छुआते ही ताले मानो जादू से तुरन्त खुल जावें ? इस बात को सीखने के लिये हमें निज अनुभव की आवश्यकता है ।

विश्वासयुक्त प्रार्थना के विषय में बहुत लोगों को कठिनाइयां पड़ती हैं वे अपने लिये प्रार्थना करने में कुछ रुकावट नहीं

पाते, परन्तु जब औरों के लिये विनती करते हैं तब उन में शंका उत्पन्न होने लगती है वे कहते हैं कि "परमेश्वर हर एक मनुष्य को प्यार करता है तो क्या वह मेरे मांगने के द्वारा किसी जन के लिये कोई काम करेगा, जो मेरे विना मांगे वह नहीं करता है।

सच पूछो तो परमेश्वर किसी मनुष्य को उत्तम से उत्तम वस्तु भी वरियाई से नहीं देता। तौभी जिसने कहा है कि "एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो कि तुम चङ्गे किये जाओ" सो यह आशा भी करता है कि औरों के लिये जो प्रेम और लालसा हमारे हृदय में है सो हम उस के सन्मुख पेश करें। परमेश्वर के अभिप्राय का एक भाग यह भी है कि हम प्रार्थना करें।

प्रार्थना वस्तुओं की दशा बदल देती है। यह बात असंभव क्यों होनी चाहिये? ईश्वर की इच्छा है कि मनुष्य को उत्तम वस्तु मिले सो यदि उस की इच्छा से हमारी इच्छा का मेल हो जावे तो अवश्य उस का भला परिणाम होगा। यदि यह संभव है कि किसी उपस्थित जन पर अपना मन लगाने से वह हमारे विषय में बिचार करने लगे तो पवित्र आत्मा के लिये जो सारे हृदय का जांचनेहारा है क्या यह अति अधिक संभव नहीं है कि वह मनुष्य से परमेश्वर पिता का ध्यान करावे।

परमेश्वर का वचन प्रार्थना की शक्ति की अपेक्षा प्रार्थना के परिणाम की अधिक चर्चा करता है। जो हमारे प्रभु ने कहा सो

और लिये बहुत है कि "मांगो तो तुम्हें दिया जायगा" "जो तुम्हारी इच्छा हो सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा।"

"तुम मांगो........वह देगा।"

६. ख्रीष्ट के नाम के द्वारा।

सामर्थ्ययुक्त प्रार्थना के लिये ख्रीष्ट ने आप ही यह आज्ञा दी। "जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे सोई मैं करूंगा।" "जो तुम मेरे नाम से कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा।" "कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम को देवे।" "जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता से मांगोगे वह तुम को देवेगा।" अब लों तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा है मांगो तो तुम पाओगे, कि तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण होय।"

(योहन १४:१३—१४, १५:१६, १६:२३,—२४)

हमारा काम इतना ही है कि हम ख्रीष्ट के नाम से मांगें और उसके नाम से पिता हम को देगा। "यीशु ख्रीष्ट के द्वारा मांगने से जो साधारण अर्थ समझा जाता है उस की अपेक्षा "ख्रीष्ट के नाम से" मांगने का अर्थ बहुत अधिक है। ख्रीष्ट के नाम से प्रार्थना करने का अर्थ यही है कि हम वैसे ही प्रार्थना करें जैसे उसने पृथ्वी पर रहते हुए किई; जैसी उस ने हम को सिखाई और जैसी वह अब स्वर्ग से करता है। अर्थात हम उसी के साथ प्रार्थना करें। हम को चाहिए कि प्रेम और

विश्वास से उस को अपना उदाहरण, शिक्षक और मध्यस्थ कर लें।

उपरोक्त बातों से अपनी जांच करने के पीछे यदि प्रार्थना के विषय में तुम्हारे मन में फिर भी संदेह हो तो नीचे लिखे पांच नियमों से उस की जांच करो। (१) क्या वह ईश्वर की इच्छा के अनुसार है? (२) क्या वह उस की महिमा के लिये है? (३) क्या वह उस के देने की प्रतिज्ञा करता है? (४) क्या वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से किई जाती है? (५) क्या वह यीशु खीष्ट के नाम से मांगी जाती है।

यदि इन में से प्रत्येक जांच के प्रश्न का संतोषदायक उत्तर तुम दे सकते हो तो सिंहासन के सन्मुख अपनी बिनती लिये ठहरे रहो। उस की प्रतिज्ञा पर भरोसा रखो कि वह पूरी होगी और उस की स्तुति करो। ईश्वर ही यह इच्छा हम में उत्पन्न करता है और वह जो गुप्त में देखता है प्रगट में तुझे फल देगा।

७. अध्याय।

ईश्वर के सहकर्मी।

"हम ईश्वर के सहकर्मी हैं" (१ करि० ३:९)

"प्रभु ने उन के संग काम किया" (मार्क १६:२०)

"हम जो सहकर्मी हैं उपदेश करते हैं" (१ करि० ६:१)

सेवकाई और प्रार्थना के लिये ईश्वर का उपाय यही है कि

हम औरों को उस के अद्भुत प्रेम की कथा सुनावें। और इस प्रकार हम अपने प्रभु के सहकर्मी बनें। उस में कोई सुधार करने की जगह नहीं है। हम बहुधा सोचते हैं कि स्वर्ग के राज्य का काम हम ही को करना है और इस के लिये आत्मा की सामर्थ्य की पूंजी इकट्ठी धरी है कि जितनी आवश्यक हो हम उस में से लिया करें। परन्तु यह विचार सर्वथा भूल और न्यूनतापूर्ण है।

औरों के लिये प्रार्थना करना और खुद सेवकाई करना ये दोनों काम साथ साथ होने चाहिये। इन दोनों को इस प्रकार चलना चाहिये मानो दो साझेदार हैं परंतु ऐसे साझेदार नहीं जैसे किसी व्यापार में होते हैं कि एक तो काम करता रहे और दूसरा काम चालू रखने की सामग्री पहुँचाया करे, नहीं, ये दो सेवकाइयां केवल उसी समय सफल हो सकती हैं जब कि वे दोनों प्रभु यीशु खीष्ट से मिली हों। स्वर्ग के राज्य रूपी व्यापार में प्रभु यीशु खीष्ट ही को सदा प्रधान साझेदार रहना चाहिए, अर्थात वही उपाय सोचे, वही आज्ञा देवे, उसी का हाथ कठिनाइयों को सुलझावे और उसी ही की महिमा होवे "हम जो सहकर्मी हैं उपदेश करते हैं" ऐसा करने से सारी चिन्ता और बोझ हट जाते और परिश्रम में आनन्द आशा और विश्वास उत्पन्न हो जाते हैं। यही सारी उदासी और निरुत्साह से बचाता है। इसी से सफलता निश्चित होती है।

१. अभिप्राय की एकता से हम को प्रभु यीशु ख्रीष्ट के साथ काम करना चाहिये।

मुझ को इस बात का निश्चय हो जाना चाहिये कि मेरा प्रभु और मैं एक ही बात की खोज में हैं। जो जन राज़ी और आज्ञाकारी है उस को पवित्रआत्मा ईश्वर की इच्छा बतलावेगा और उस जन को उस इच्छा का ऐसा सुबोध हो जावेगा कि जो कुछ पवित्रआत्मा का मन है उस का उसे पूरा निश्चय हो जायगा और यूं वह अनेक भूल और हानि से बचा रहेगा।

यदि हम चाहते हैं कि अनुग्रह के सिंहासन के सन्मुख हमारी प्रार्थनाएं लाभदायक होवें तो अवश्य है कि हम पवित्र-आत्मा को प्रथम स्थान देवें। ईश्वर के महाविचारों और विश्व-व्यापी अभिप्रायों को जानने के लिये वही हमारी अगुवाई करे।

सारा काम बड़ी सादगी और धीरज से किया जाना चाहिये क्योंकि ईश्वर उसे हमारे हाथों में सौंपता है और तब वह निस्सन्देह उस में आशीष देगा। काम बड़े महत्त्व का है। इस से घबरा मत जाओ। कदाचित आप अपने को उस के अयोग्य समझते हों और चाहते हों कि कोई दूसरा उसे अधिक अच्छी रीति से करे। परंतु यदि परमेश्वर ने आप को कोई काम करने को कहा है तो आप ही उसे क्यों न करें। हो सकता है कि कोई दूसरा उस काम को अधिक अच्छी रीति से कर सके परंतु आप को इससे कुछ मतलब नहीं, परमेश्वर ने आप ही को वह

काम करने को भेजा है किसी और को नहीं, उसे उचित रीति से करने के लिये आप को जो कुछ सामर्थ्य की आवश्यकता होगी सो परमेश्वर देगा। "मेरा ईश्वर तुम्हारी सारी आवश्यकताओं को पूरी करेगा" जब हम अपनी खुदी को बीच में ले आते हैं तब ही हम को इन सब बातों का ख्याल आता और हम समझने लगते हैं कि मैं इस काम को नहीं कर सकता हूं। यदि कोई काम हमने अपने आप हाथ में नहीं लिया हो परंतु ईश्वर उसे करने को कहता है तो आप उसे उत्तम रीति से कर सकते हैं। चाहे वह आत्मिक ही काम क्यों न हो और आप डरते हों कि औरों की आत्माओं को मेरे द्वारा हानि होगी तौभी आप को डरना न चाहिये। परमेश्वर ने आप को बुलाया है और वही आप की सहायता करेगा। आप उस पर केवल विश्वास भर कीजिये और स्मरण रखिये कि काम करनेवाले आप नहीं वरन परमेश्वर है जो आप के द्वारा काम करता है बहुत शान्त और धीरजवन्त होइये। और परमेश्वर पर भरोसा रखिये तब वह सारी घबराहट से आप को बचावेगा।

(२) आत्मा की एकता से हम को उस के साथ काम करना चाहिये।

"खीष्ट का सा मन होय" प्रभु यीशु खीष्ट को (१) अपने जीवन में और (२) मनुष्यों के जीवन में अपने पिता की महिमा प्रगट करने की लालसा थी; प्रभु यीशु खीष्ट, विचार और काम में अपने पिता से सहमत था, वह परमेश्वर ही के

द्वारा परमेश्वर में, और परमेश्वर के लिये, जीता, चलता फिरता, और पाया जाता था, यही बात हम में भी पाई जावे। तब "भक्ति" कोई साधारण बात न रहेगी परंतु ईश्वरीय प्रेम से हमारे हृदय ऐसे पिघल जावेंगे कि हमारी आत्माएं उस की आत्मा में लीन हो जावेंगी।

३. आनन्दपूर्वक आत्मसमर्पण से हम को उस के साथ काम करना चाहिये।

जिस मनुष्य ने सहकारिता का यह भेद सीख लिया है सो आत्मसमर्पण में ऐसा आनन्द पाता है कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता, उस को यह मालूम हो जाता है कि जहाँ पवित्र आत्मा का उपयोग किया जा सकता है उस दशा में प्रवेश करने के लिये मुझे कोई परिश्रम तथा यत्न करने की आवश्यकता नहीं। वह अपना सारा जीवन अर्पण कर देता है कि उस में पवित्र आत्मा वास करे और उसे काम में लावे। और वह उसी पर भरोसा रखता है। उस मनुष्य के काम में से खुदी जाती रहती है उस के विचार में भी वह कोई स्थान नहीं पाती; उस के लिये वह ईश्वर का काम, ईश्वर का उपाय, ईश्वर की रीति, ईश्वर की शक्ति—हां ईश्वर ही उस के लिये सब में सब कुछ हो जाता है।

(४) जयवन्त विश्वास से हम को उस के साथ काम करना चाहिये।

हम ईश्वर के सहकर्मी हैं जो आश्चर्यकर्म करता है इस बात

के जानने और मालूम करने से हमारे मुख पर निश्चय झलकने लगेगा। परमेश्वर अवश्य बुराई पर जयवन्त होगा। समय की पूर्णता, जिसमें कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है सब कुछ परमेश्वर ख्रीष्ट में संग्रह करेगा। जब कि परमेश्वर सारी सृष्टि को अपने साथ एक कर लेगा, इस बात को समझते हुए और मानते हुए काम करो। तुम्हारे शब्द का सुर भी खुल जावे तब प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।

वह ऐसा परमेश्वर है जो उन के लिये काम करता जो उस पर आशा लगायें ठहरे रहते हैं। परमेश्वर पर आशा लगाये ठहरे रहने में जो समय व्यतीत होता है सो व्यर्थ नहीं जाता, इस से काम करनेहारे को न केवल ईश्वर की सहभागिता ही प्राप्त होती है वरन वह ईश्वर की शक्ति से परिपूर्ण हो जाता है जो उचित समय पर उन लोगों तक पहुंचेगी जिन्हें पिता अपने आत्मा के द्वारा अपने सुसमाचार के लिये तैयार करता है।

यदि मेरा प्रभु और मैं एक ही बात की खोज में हैं तो मैं निस्संदेह विश्वास कर सकता हूं कि जब मैं प्रार्थना करता हूं तब वह काम करता है।

एक समय एक मनुष्य बड़ा शराबी और किरिया खानेवाला था। पवित्रात्मा ने किसी मल्लाह के दिल में उस के निमित्त बड़ी बेचैनी डाली। एक महीने तक प्रतिदिन वह मल्लाह परमेश्वर के साम्हने गिर कर उस जन के लिये प्रार्थना करता रहा और आशा करता रहा कि परमेश्वर अपना काम अवश्य

करेगा। मल्लाह कहता है कि "तब आत्मा ने तुझे जगाया" एकाएक वह शराबी अपनी आत्मा के विषय में अत्यन्त चिन्तायमान हुआ पर नहीं जानता था कि इस का कारण क्या है उस ने अपने तईं प्रभु यीशु ख्रीष्ट को सौंप दिया और शराब पीने की सारी इच्छा और किरिया खाने की प्रकृति मानो जादू के द्वारा जाती रही। तब से वह नया मनुष्य हो गया।

एक सन्डे स्कूल की पाठिका के मन में परमेश्वर ने एक मनुष्य के लिये प्रार्थना करने की इच्छा डाली जो कि ऊपर कहे हुए मनुष्य से बिलकुल भिन्न था। कुछ दिन तक बड़े उत्साह से प्रार्थना करने के बाद चाहती थी कि उस की दशा जाने। परंतु उस के निकट पहुँचना कुछ कठिन था। उस ने फिर प्रार्थना किई कि "हे प्रभु अब आगे मैं क्या करूं सो मुझे सिखा" साथ ही इस के वह विश्वास भी करती थी कि परमेश्वर निस्सन्देह काम कर रहा है। निदान एक दिन अचानक वह मनुष्य उस पाठिका को ढूंढ़ता हुआ आया और कहने लगा "कृपा करके मेरे लिये प्रार्थना कीजिये, मैं प्रभु यीशु ख्रीष्ट की सेवा करना चाहता हूं।"

कदाचित इस से भी एक अधिक आश्चर्यजनक वृत्तान्त एक एक करके कार्य करनेहारी सभा के सभासद का है। वह किसी शिल्पकार के दफ्तर में केवल एक लेखक था। वह अपने स्वामी के लिये प्रार्थना करने लगा, अपने मालिक से उस की आत्मा के विषय में बातचीत करना, पहिले तो उस को असम्भव सा जान पड़ता था। परंतु वह लड़का ईश्वर पर विश्वास रखके

प्रार्थना करता ही रहा। एक दिन अचानक उस के मालिक ने उस से कहा "मैं नहीं जानता कि तुम में वह कौन सी बात है, परंतु कुछ अवश्य है जो मुझ में नहीं है" अब तो बीच का पहाड़ हट गया। और बातचीत करने का मार्ग खुल गया।

गार्डन साहिब कहते हैं कि "द्वार मूंद कर अपनी कोठरी में आधा घन्टा किसी देश के लिये प्रार्थना करना मानो उस देश में मिशनरी का काम करना है"।

इसी प्रकार से इंग्लिस्तान के किसी स्कूल की प्रिन्सिपल ने चीन देश में सात आत्माएं कमाने में सहायता दी। वह लिखती है कि जिनके लिये मैं ने प्रार्थना किई उन में से अठारह प्रभु के पास आ गये हैं। सात चीन देश में और ग्यारह इंग्लिस्तान में, चीन देश में एक काम करनेहारी ने मेरे पास विशेष विशेष नाम भेज दिये और हम ने एक साथ उन के लिये प्रार्थना की।

एक समय एक महिला भोजन कर के अपने कमरे में चली गई। वहाँ उस के मन में अफ्रीका देश के एक मिशनरी के लिये प्रार्थना करने की दृढ़ इच्छा हुई। उस की आत्मा पर पवित्र आत्मा की शक्ति का बड़ा प्रभाव हुआ। उस मिशनरी के लिये प्रार्थना करने में वह यहाँ लों लिप्त हुई कि बाहर की किसी बात का उस को ज्ञान नहीं रहा। जब लों कि चा पीने के लिये वह बुलाई न गई।

उसी दिन और उसी घड़ी पवित्र आत्मा ने उस मिशनरी के मन में भी ईश्वर की खोज के लिये ऐसी लालसा उत्पन्न किई

कि वह भी प्रार्थना में लीन हो गया यहां लों कि उस को भी अपने आस पास की वस्तुओं की सुध न रही। इस का परिणाम यह हुआ कि उस मिशनरी के ज़िले में पवित्र आत्मा के अनुग्रह की अद्भुत वर्षा हुई।

जयवन्त विश्वास से ईश्वर के साथ काम करने का एक बहुत अच्छा उदाहरण एक स्त्री है जिसका पुत्र परमेश्वर से बहुत दूर था। दो चार जन के इकट्ठा होकर प्रार्थना करने में बड़ी शक्ति होती है। इस बात को उस ने भली भांति समझ लिया था। इस लिये उस ने दो तीन ख्रीष्टयान लोगों को इकट्ठा किया कि वे उस के साथ उस के पुत्र के लिये प्रार्थना करें। इससे कुछ लाभ होता न दिखाई दिया। क्योंकि वह लड़का अधिक बिगड़ता जाता था। निदान उस ने जहाज़ की नौकरी उठा ली। कुछ दिन पीछे समाचार आया कि जिस जहाज़ पर वह गया था सो समुद्र में डूब गया। और उस पर के सब लोग डूब मरे।

जो लोग उस के साथ प्रार्थना किया करते थे उन को उस स्त्री ने बुलवा भेजा। वे ये समझ कर आये कि हम को उस के साथ शोक करना होगा। परन्तु जब वे आये तब वह उन से हँसते हुए मिलीं। और कहने लगी कि मैं चाहती हूं कि मेरे पुत्र की मुक्ति के लिये आप मेरे साथ परमेश्वर का धन्यवाद करें। मैं जानती हूं कि परमेश्वर ने हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है और कि मेरा पुत्र मरने से पहिले जान पा गया।

ये लोग उस स्त्री पर तरस खाने लगे और समझते थे कि इस महाशोक के कारण विचारी माता पागल सी हो गई है। क्योंकि उस लड़के में बदलाहट के कुछ भी चिन्ह नहीं थे जिससे कहा जा सके कि वह मरने से पहिले पश्चात्ताप करके बच गया होगा। जैसे तैसे उन्हों ने धन्यवाद करके मीटिंग समाप्त किई, परंतु वह माता बिलकुल निराश न हुई, वह बार बार यही कहा करती थी कि मैं अपने प्रभु पर संदेह नहीं कर सकती हूं। मैं जानती हूं कि वह मेरी प्रार्थना का उत्तर देगा।

कई हफ्ते बीत गये, एक दिन उस के पुत्र के पास से चिट्ठी आई जो बहुत दूर किसी नगर के अस्पताल में बहुत बीमार था। उस में लिखा था कि जहाज़ के डूबने पर मैं और मेरा एक साथी बचा लिये गये। और जब अपनी जान बचाने के लिये मैं पानी में तैर रहा था तो उसी घड़ी पर प्रभु यीशु ख्रीष्ट आया और मेरी आत्मा को बचाया। एक दूसरे जहाज़ के लोगों ने हम को अपने जहाज़ में लेकर किनारे पहुंचाया। मैं बहुत बीमार था। परंतु अपने त्रान कर्ता प्रभु यीशु ख्रीष्ट में मैं आनन्द करता हूं।

परमेश्वर की इच्छा पर अपने को पूरी रीति से छोड़ देना और बिश्वास सहित प्रार्थना करना। इस के उत्तर में पमेश्वर जो कुछ कर सकता है उस की कोई सीमा नहीं है।

एक ख्रीष्टयान मंडली थी, जिस के द्वारा कोई जन ख्रीष्ट के पास नहीं आता था। इस के कुछ लोगों को दुःख हुआ, क्योंकि

उन्होंने जाना कि जो मंडली संसार के लोगों को खीष्ट के पास लाने का परिश्रम नहीं करती है सो परमेश्वर की आज्ञा पूरी नहीं करती ।

वे इकट्ठे होकर एक मत से प्रार्थना करने लगे कि पवित्र आत्मा का दान उंडेला जावे । लगभग एक वर्ष से अधिक वे इस प्रकार प्रार्थना करते रहे, निदान उत्तर मिला । अचानक परमेश्वर का आत्मा उन पर उतरा और ८० जन प्रभु की ओर फिराये गये । वाहर के लोगों ने यह देखा और आश्चर्य करने लगे ।

परमेश्वर की सहकारियों की प्रार्थनाओं की एक एक कड़ी मिल कर कैसी अद्भुत और प्रभावशाली ज़ंजीर वन जाती है ।

इंग्लिस्तान में एक स्त्री थी जिसने मारीशस द्वीप में रहनेहारे एक योद्धा को प्रभु यीशु खीष्ट के विषय में लिखा । वह उस के पास वरावर लिखती रही और उस के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करती रही जव लों कि उस योद्धा ने प्रभु यीशु खीष्ट को ग्रहण न कर लिया, थोड़े दिनों में उस योद्धा ने अपने दो संगियों को खीष्ट के लिये कमाया और उन को भी उस काम में प्रवृत्त किया ज्यों ज्यों दिन वीतते जाते त्यों त्यों वह ज़ंजीर बढ़ती जाती है ।

एक और स्त्री का वर्णन है जिसके मन पर परमेश्वर ने विशेष रीति से उस की नौकरी का वोझ डाला । वह उस के लिये प्रार्थना करने लगी यहां लों कि वह नौकरानी न केवल

प्रभु यीशु ख्रीष्ट के पास लाई गई परंतु उसी घराने की दो और नौकरानियों के लिये तुरन्त प्रार्थना करने लगी। उस की प्रार्थना और अच्छे नमूने के द्वारा वे भी ख्रीष्ट के पास पहुंच गईं। इन दो में से एक सन्डे स्कूल पढ़ाने लगी। और बहुत दिन न बीते कि उस की कक्षा के तीन बालकों ने अपने मन प्रभु यीशु ख्रीष्ट को दे दिये।

एक पापीजन जो अपने बुरे मार्गों को छोड़ता और पश्चात्ताप करके परमेश्वर की ओर फिरता है उस के हृदय से मुक्ति की धाराएं वहती हैं, इसे केवल परमेश्वर आप ही जानता है।

"एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो कि तुम चंगे किये जाओ।"

अध्याय ८।

एक एक करके कार्य्य करनेहारी सभा

"तुम एक एक करके बटोरे जाओगे" यशायाह २७ : १२ इस छोटी सी पुस्तक में आवश्यकतानुसार एक एक करके कार्य्य करनेहारी सभा की चर्चा किई गई है। और हमें निश्चय है कि पढ़नेहारे इस का अर्थ समझ गये होंगे।

इस सभा के लोग सब मंडलियों से सम्बन्ध रखनेहारे वे ख्रीष्टयान हैं जो शुद्ध और निर्मल धर्म्म के नये उत्साह की

आवश्यकता देख कर लोगों को प्रार्थना और शख्सी यत्न के द्वारा ख्रीष्ट के पास लाना चाहते हैं।

यह सभा सब मंडलियों और जातियों के लिये है। कई सहस्र मनुष्य इस में सम्मिलित हैं, जो विलायत, हिन्दुस्तान और भिन्न भिन्न देशों के रहनेहारे हैं।

उस के सभासद यह मानते हैं कि यह सभा लोगों को ख्रीष्ट के शिष्य करने का एक सहज और उत्तम द्वारा है जो ईश्वर के इच्छानुसार है। जहां तक लोगों ने इस उपाय के अनुसार ठीक ठीक यत्न किया है वहां तक इस से बहुत उत्तम फल निकला है। यह बात मेरे अनुभव से प्रगट हो जायगी।

प्रायः पचास वर्ष हुए जब कि प्रभु ने मेरा उद्धार किया। और उस समय उस ने मुझे यह सिखलाया कि मेरा कर्तव्य कर्म्म यह है कि औरों के लिये मैं प्रार्थना करूं जिस्तें वे भी इस उद्धार को प्राप्त करें। अपनी इस उत्तरदायकता को पहिचान कर कि दूसरों को उद्धार प्राप्त होवे, मैं उस की बाट जोहता रहता था। पश्चात् मुझे यह भी मालूम हुआ कि और लोग भी इस कार्य्य में लगे हुए हैं परन्तु उन्होंने धैर्य्यपूर्वक प्रार्थना में लगे रहकर यह मालूम नहीं किया कि वे कौन लोग हैं जिनके लिये प्रभु की इच्छानुसार प्रार्थना करनी चाहिये। उन्होंने कई एक पृथक पृथक व्यक्तियों के लिये प्रार्थना किई परन्तु इस कार्य्य में उन्हें केवल निराशता और असफलता के अतिरिक्त और कुछ हाथ न लगा।

इस बात को देख कर मैं ने अपने कुछ मित्रों के लिये जेब में रखने योग्य एक छोटी सी पुस्तक तैयार किई। जिस में कि वे लोग उन लोगों के नाम लिख कर रख सकें जिनको वे ईश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सन्मुख रखा करते हों। इसी छोटे उपाय के द्वारा एक एक करके कार्य्य करनेहारी सभा की वृद्धि हुई। ऐसी पुस्तकें लगभग पांच हज़ार बांटी जा चुकी हैं। और सहस्रों मनुष्यों के मन ईश्वर की ओर फिरे। जिसके विषय हमारे पास अनेकों पत्र आ चुके हैं। इस सभा का कार्य किसी विशेष पंथ से सम्बन्ध नहीं रखता। उस का विशेष अर्थ यह है कि लोग खीष्ट के पास आवें। इस सभा के सभासदों के कार्य्य करने के उपाय भिन्न भिन्न हैं परन्तु वे सब इस बात पर साक्षी देते हैं कि यह उपाय लोगों को ईश्वर के निकट लाने का बहुत ही सहज और ईश्वर की इच्छानुसार है। और प्रत्येक जन जो इस उपाय के द्वारा लोगों को खीष्ट के निकट लाना चाहे, ला सकता है।

यह उपाय अपने अनुयाइयों को यीशु खीष्ट की संगति के बंधन में बांधता है। और खीष्टयानों को परस्पर सहायता करने में सहायक होता है। इसी उपाय पर खीष्टयान् मंडली की नींव पड़ी। देखो योहन १:३५—५१ यह एक ऐसा शख्सी काम है जिस के द्वारा हर एक खीष्टयान आत्माओं को प्रभु की ओर ला सकता है।

इस उपाय से उपदेशक को सहायता मिलती है, कि त्राण

न पाये हुए लोगों को अपनी मंडली में लाकर उन्हें सुसमाचार सुनावे।

इस उपाय से मंडली के सब लोगों को एक होकर खोए हुए लोगों को बचाने की सहायता मिलती है।

बीमार और एकांत वासी लोगों को इस उपाय से उस सेवा का आनन्द प्राप्त होता है जिससे उन्हें उद्धार मिलता है।

इस उपाय से मंडली के लोगों में मेल मिलाप और सुसमाचार प्रचार करने का नया उत्साह उत्पन्न हो जाता है जिसे देख कर पास्टर और प्रचारक दोनों ही को परमआनन्द प्राप्त होता है।

इस उपाय से घराने सम्बन्धी धर्म्म में सत्यता और बल की वृद्धि होती है क्योंकि घर के वे लोग जो उद्धार पा चुके हैं घर के दूसरे लोगों के लिये प्रार्थना में लगे रहते हैं।

शुद्ध और निर्मल धर्म्म के सम्बन्ध से लोगों में नया उत्साह बढ़ाने और उसे स्थिर रखने का यही एक दृढ़ और अटल उपाय है यदि प्रत्येक खीष्टयान इस उपाय को काम में लावे तो पांच साल में दस करोड़ लोगों के खीष्टयान हो जाने की सम्भावना है।

इसके द्वारा यीशु खीष्ट की मंडली में एकताई हो सकती है। और यीशु खीष्ट की उस प्रार्थना का उत्तर प्राप्त हो सकता है। जो योहन रचित सुसमाचार के सतरहवें पर्व में तीन बार पाई जाती हैं कि उस के सब लोग एक होवे "इस लिये कि जगत जाने और बिश्वास करे कि तू ने मुझे

भेजा है ।" एक स्थान है जहां सब एक होके एकत्र होते हैं और वह स्थान ईश्वर के अनुग्रह का सिंहासन है । एक कार्य्य है जिसे सब खीष्टयान एक हो के करते हैं और वह कार्य्य लोगों को यीशु खीष्ट के पास लाने का है जहां मंडलियां प्रार्थना करने और लोगों को यीशु खीष्ट के पास लाने में एक हो जाती हैं वहां के कार्य्य का फल अवश्य महिमायुक्त होगा ।

मुझे एक बात स्मरण आती है वह यह है कि एक नगर में तीन मंडलियां थीं जिनमें सदैव मतभेद बना ही रहता था और छोटी छोटी बातों के कारण डाह और बैर की वृद्धि होती जाती थी । उन की यह दशा दूसरों के लिये बड़ी शोकोत्पादक थी । धर्म्म में नया बल प्राप्त करने के हेतु वे एक सभा में एकत्र हुए। जहां उन के पाद्री के उपदेश और प्रार्थना द्वारा उन्हें बड़ी सहायता मिली अर्थात ईश्वर का आत्मा उन पर पड़ा । और इस प्रकार उन्हें अद्भुत उद्धार और आशिष प्राप्त हुआ। यदि किसी मंडली में सौ आदमी होवें और वे सब के सब एक हज़ार पुरुषों और स्त्रियों के बचाने के लिये प्रतिदिन प्रार्थना में लगे रहें । तो इस का ऐसा परिणाम होगा जिससे संसार आश्चर्य करेगा ।

पाद्री. आर. मिडिलटन साहिब शख़्सी काम का एक बहुत अच्छा उदाहरण देते हैं । उन का कथन है कि मेरी मंडली में एक स्त्री है जो एक बैबल क्लास पढ़ाती है। वह एक अद्भुत रीति से अपना कार्य्य करती है । उस की कक्षा में लगभग सौ

स्त्रियां हैं जो पक्की ख्रीष्टयान हैं। जब कोई नई स्त्री उस की कक्ष में आती है तो वह उस से यह प्रश्न करती कि "तुम ईश्वर की बालिका हो कि नहीं" और यदि यह उत्तर मिलता कि "नहीं" तो कक्षा की सब स्त्रियां तुरंत ही उस का मन फिरने के लिये प्रार्थना करना आरम्भ कर देती हैं। इस का परिणाम यह होता है कि कोई स्त्री बिना अपने को ईश्वर के हाथ में दिये, और बिना नया जन्म प्राप्त किये नहीं रह सकती। इस रीति से बहुत स्त्रियां ख्रीष्ट पास लाई गईं और मैं समझता हूं कि शख्सी काम का यह एक योग्य उदाहरण है।

सन्डे स्कूल के पाठकों को इस उपाय से कार्य्य करने के द्वारा बड़ी ही सहायता प्राप्त हुई है। उन की चिट्ठियों की कुछ बातों से जो नीचे लिखी हैं आप को मालूम हो जायगा कि क्या कुछ काम हुआ है।

नम्बर १। कृपा करके मेरे साथ ईश्वर का धन्यवाद कीजिये कि चार लड़कियां जिन के नाम मैं ने अनुग्रह के सिंहासन की पुस्तक में लिख रक्खे थे, ख्रीष्ट की अनुचर होवें, उन में से एक के लिये मैं ने केवल दो या तीन माह तक प्रार्थना किई।

नम्बर २। जब से मैं ने शख्सी रीति पर अपना कार्य्य करना आरम्भ किया है तब से मेरी कक्षा की कई एक लड़कियों ने अपने को ख्रीष्ट के हाथ में दे दिया है और

बची हुई सोलह और लड़कियां प्रभु के पास आने की इच्छा प्रगट करती हैं।

नम्बर ३। मेरी कक्षा के एक नये विद्यार्थी को छोड़ कर सब विद्यार्थी जिनके नाम मेरी प्रार्थना की फ़िहरिस्त पर लिखे थे खीष्ट के अनुयाई बन गये।

नम्बर ४। हमारी मंडली में एक विशेष धर्म सम्बन्धी कार्य्य हुआ। कार्य्य समाप्त होने पर हमारे पाठकों में से एक ने खड़े हो कर कहा। कि मैं कुछ समय से अपनी कक्षा के छः बालकों के लिये प्रार्थना करता था और अब मैं बड़े हर्ष से देखता हूं कि वे सब के सब खीष्ट के हो गये। उसी समय किसी एक मेम साहिब ने बतलाया कि उन्होंने अपनी कक्षा की आठ लड़कियों को प्रभु से मांगा। और वे सब उस के निकट आ गईं।

नम्बर ५। इस वर्ष मुझे इस बात से बड़ा आनन्द हुआ कि वे बीस जन जिन के नाम मेरी प्रर्थना के फ़िहरिस्त में लिखे थे, प्रभु के निकट आ गये बहुत और लोग भी ऐसा ही लिखते हैं।

एक का कथन है कि दो युवा मनुष्य जिनके लिये मैंने कुछ दिन प्रार्थना किई प्रभु के निकट आ गये और मेरी कक्षा के सम्भागी बन गये। और अब मैं नामों की एक नई फ़िहरिस्त तैय्यार कर रहा हूं।

दूसरा लिखता है कि मेरी फ़िहरिस्त पर एक युवा मनुष्य का

नाम था। जिसके लिये मैं ने बड़े उत्साह से प्रार्थना किई परन्तु औरों की अपेक्षा उस की शीघ्र ख्रीष्ट के पास आने की कोई आशा दृष्टि न पड़ती थी। इतवार के सवेरे मामूल के अनुसार मैं कक्षा में अपने स्थान पर जा बैठा। इतने में यही जवान भीतर आया। मैं ने उसे देख कर पूछा कि तुम आ गये? उस ने बड़ी सिधाई से यह उत्तर दिया कि हाँ मैं आ गया हूं। और मैं बड़े हर्ष से आप को यह सन्देश देता हूं कि मैं ने गये बृहस्पतिवार को अपने तईं ख्रीष्ट के हाथ में दे दिया।

स्त्रियों की सभाओं को भी इस उपाय के अनुसार काम करने से बहुत लाभ पहुँचा है एक कक्षा में तीन स्त्रियां थीं। पन्द्रह दिन ही की प्रार्थना के पश्चात् वे ख्रीष्ट के निकट आ गईं और उन में से एक का पति भी जो बड़ा शराबी था फिर गया। वह मनुष्य दो और मनुष्य और दो स्त्रियों को प्रभु के निकट लाने का द्वारा बना, इस प्रकार इस कार्य्य की उन्नति दिन प्रति दिन होती ही जाती है।

बहुतेरे शराबी जिन को सुधारने के लिये अनेक उपाय निष्फल हुए। लोगों की प्रार्थना के द्वारा ख्रीष्ट के निकट लाये गये।

एक और मनुष्य जो ईश्वर की सेवा करता है ऐसा लिखता है कि यदि मैं औरों के लिये प्रार्थना करना छोड़ना चाहूं तो नहीं छोड़ सकता क्योंकि प्रभु ने प्रार्थना करने के लिये लोगों के नाम मेरे मन पर लिख दिये हैं। हाल में मेरी फ़िहरिस्त

पर पैंतीस नाम हैं। बाईस ऐसे हैं जिनके लिए मैं प्रार्थना करता हूं कि वे खीष्टयान हो जावें। तब ऐसे हैं जो अपने विश्वास से हट गये हैं और मैं प्रार्थना करता हूं कि वे फिर प्रभु के निकट आ जावें। और चार के लिये मैं प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें पवित्र आत्मा की परिपूर्णता मिले। जो बिश्वास से हट गये उनमें से पांच चीन देश के लोग हैं।

बहुधा लोग हम से पूछा करते हैं कि अपनी अनुग्रह की फ़िहरिस्त में लोगों के नाम लिखने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने का आप का क्या अभिप्राय है ?

यह एक मुख्य प्रश्न है और यदि यह भली भांति समझ न लिया जाय तो सारा परिश्रम निष्फल होगा।

प्रथम बात यह है कि जिन लोगों के लिये हमें प्रार्थना करनी है उनके विषय प्रभु की इच्छा जान लेनी अवश्य है। जब यह बात पहले पहल पवित्रआत्मा के द्वारा मेरे मन में डाली गई तब मेरी चिन्ता केवल यह थी कि मेरे निज घराने के वे लोग जिन्होंने उद्धार नहीं पाया था, उद्धार पा लें। एक विशेष पाठ जो मुझे सीखना पड़ा सो यह था कि ईश्वर का प्रेम निःस्वार्थ है और यदि हम अपनी प्रार्थना में विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो हमारा प्रेम भी ईश्वर के प्रेम के सदृश होना चाहिये।

पवित्रआत्मा खीष्टयानों को उभारता है कि वे विशेष व्यक्तियों के लिये प्रार्थना किया करें यह तो सत्य है कि यीशु खीष्ट ने

ईश्वर के अनुग्रह की शक्ति से प्रत्येक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चीखा, पर हमें यह जानना है कि क्या हम विशेष जनों के लिये प्रार्थना कर सकते हैं। इस बात के लिये पवित्रआत्मा की अगुवाई और मन की स्थिरता की आवश्यकता है और जो लोग इस प्रकार ईश्वर की अगुवाई की बाट जोहते हैं उन्हें निःसंदेह यह मालूम हो जायगा। कि किन लोगों के लिये प्रार्थना करने की आवश्यकता है। जब इस बात का ज्ञान हो जावे तब उन के नाम प्रार्थना की फ़िहरिस्त में लिखे जावें और विश्वास के साथ प्रति दिन प्रभु के सन्मुख प्रार्थना में स्मरण किये जावें, तब निःसंदेह हमें कटनी का आनन्द प्राप्त होगा।

मंडली के इतिहास में ऐसे बहुत उदाहरण मिलते हैं। फ़िनी साहब का कथन है कि "मैं एक आदमी को जानता हूं जो उन आदमियों के नामों की एक फ़िहरिस्त रखकर उन के लिये बड़े उत्साह से प्रार्थना किया करता था जिन्हें बचाने की उस की बड़ी अभिलाषा थी। इस का परिणाम यह हुआ कि बहुतेरों ने शीघ्र ही उस की प्रार्थना से प्रभु के द्वारा उद्धार पाया। इस बात की सत्यता के प्रमाण में मैं ने शख़्सी रीति पर कार्य्य करनेहारी सभा के कई एक मनुष्यों से पत्र पाये हैं। ईश्वर विश्वासयोग्य है और हमें इस समय ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो प्रभु की इच्छा जानते हुए अपराधी लोगों के उद्धार के लिये स्थिर-चित्त हो कर प्रार्थना कर सकें"।

कुछ दिन हुए एक मेम साहिबा ईश्वर से प्रार्थना कर रही थीं

जिस्तें उन्हें ठीक ठीक मालूम हो कि वे किन लोगों के नाम अपने अनुग्रह के सिंहासन की फ़िहरिस्त में लिखें। एकाएक उनके मन में एक मनुष्य का रूप साफ़ साफ़ दिखाई पड़ा। पश्चात उन्हें मालूम हुआ कि यह वह मनुष्य था जो कि मालिक मकान ने उनके घर को मरम्मत के लिये भेजा था। वे उस के लिये प्रार्थना करने लगीं परंतु उन के मन में अशान्ति का एक विचित्र भाव उत्पन्न हुआ। उन्होंने फिर प्रार्थना में प्रभु से पूछा कि उस की क्या इच्छा है कि वे उस के लिये क्या करें और उन्हें ठीक ठीक मालूम हुआ कि उन्हें उस मनुष्य से अवश्य भेंट करनी चाहिये। प्रभु की इस इच्छानुसार वे उस से भेंट करने गईं और उसे चय रोग से पीड़ित पाया। मेम साहिबा को देख कर उस मनुष्य को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे उस के घर बारम्बार जातीं और प्रभु के विषय उस से बातें करतीं, परंतु वह इन सब बातों को सुन कर कुछ उत्तर न देता था। एक दिन उस ने खुद मेम-साहिबा को बुलवाया, और उस के कुछ दिन बाद ख्रीष्ट को ग्रहण किया और इस घटना के तीन सप्ताह के पश्चात वह वैकुंठवासी हुआ।

हे पढ़नेवालो क्या तुम इस कार्य्य करनेहारी सभा के भागी न बनने से जो हानि होगी उसे उठाने को तैय्यार हो? टुक विचार करो कि प्रायः दस हज़ार ईश्वरभक्त लोगों की प्रार्थना से तुम्हारे जीवन को क्या कुछ लाभ प्राप्त हो सकता है। स्मरण रक्खो कि इन लोगों के साथ सम्भागी होने और उन की

साक्षों के सुनने से तुम्हें बड़ी सहायता मिल सकती है। उन के संग मिल कर प्रार्थनाओं के उत्तर देने हारे विश्वास योग्य ईश्वर का धन्यवाद करने और कटनी की बाट जोहने में तुम्हें अमित आनन्द और हर्ष प्राप्त हो सकता है।

Printed by Apurva Krishna Bose, at The Indian Press, Ltd., Allahabad.